



# साहस सृजन



## संग्रामे पराक्रमी जयी





साहस की लौ जलाकर बढ़ाएँ कदम,  
सृजन के रंग से सजाएँ हिंदी का गगन

## हिंदी पर्व

साहस और सृजन का मेल,  
जहाँ भाषा में बसता है भारत का सौंदर्य और मेला।  
अक्षरों की शक्ति से जुड़ें हर दिल के तार,  
बढ़े हौसला, जगाएँ नवसृजन के विचार।





साहस की लौ जलाकर बढ़ाएँ कदम,  
सृजन के रंग से सजाएँ हिंदी का गगन

## हिंदी पर्व

साहस और सृजन का मेल,  
जहाँ भाषा में बसता है भारत का सौंदर्य और मेला।  
अक्षरों की शक्ति से जुड़ें हर दिल के तार,  
बढ़े हौसला, जगाएँ नवसृजन के विचार।



## बल का ध्येय

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का लक्ष्य है राष्ट्र की **एकता, अखण्डता एवं संविधान** की मर्यादा को अक्षुण्ण रखना। देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित रखने तथा कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए शासन को कौशलपूर्ण एवं प्रभारी सहायता प्रदान करना इसका उद्देश्य है ताकि **सामाजिक सद्भाव तथा राष्ट्र के विकास** को गति मिले।

राष्ट्रीय आपदाओं से निपटने के लिए और आंतरिक सुरक्षा के कुशल प्रबंधन की श्रेष्ठता के लिए बल के सदस्य सदा प्रयत्नशील रहेंगे।

हमारा संकल्प है कि हम यह लक्ष्य नागरिकों की स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा का सम्मान करते हुए पूर्ण करेंगे। राष्ट्र की **‘सेवा एवं निष्ठा’** हमारे जीवन के सर्वोच्च मूल्य होंगे।



# साहस सृजन

प्रथम संस्करण



## संपादक मंडल

### संरक्षक

श्री दानेश राणा, भा0 पु0 से0  
महानिरीक्षक

### सह संरक्षक

श्री विनय कुमार राय  
उप महानिरीक्षक (प्रशासन)  
श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय  
उप महानिरीक्षक (संभरण एवं लेखा)

### संपादक

श्री कैलाश, कमाण्डेंट (संभरण एवं लेखा)  
श्री सूरज सिंह फोगाट, कमाण्डेंट (प्रशा0/प्रशि0)

### सह-संपादिका

श्रीमती सरिता शर्मा, सहायक कमाण्डेंट (राजभाषा)

### तकनीकी व अन्य सहयोग

निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) रमेश कुमार पाण्डेय  
सहा0 उप निरी0 (मंत्रा0) महावीर सिंह

नोट :- पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं, संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## अनुक्रमणिका

- संदेश
- पदक
- शहीदों को नमन
- साहस, सृजन, वीरता और सृजनशीलता का अद्भुत संगम
- हिंदी दिवस : मातृभाषा का गौरव
- साहस के सैनानी ना रूकें न झुकें
- हल्दर की प्रतिज्ञा
- वीर जवानों की गाथा
- जय हो.... सीआरपीएफ
- कोबरा प्रशिक्षण एवं साहस से निर्मित जंगलों की अजेय गाथा
- कोबरा : वीरता, रणनीति और अदम्य साहस की मिसाल
- अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कोबरा का प्रेरणादायी आयोजन
- साहस, समर्पण और सफलता : 210 कोबरा की गौरवगाथा
- ऑपरेशन केजीएच : 204 कोबरा की वीर गाथा
- कंठस्थ 2.0 अनुवाद एक प्रतिभागी की दृष्टि से
- भूले बिसरे जीवन की गूंज
- मौन में भी जयघोष हूं मैं
- छांव
- रक्तदान – महात्मा गांधी की पूण्यतिथि पर कोबरा का रक्तदान
- योग और मानसिक स्वास्थ्य
- अगली पीढ़ी के प्राणों में भी बसानी होगी हिंदी
- यादों का झरोखा
- भारत के वीर
- आत्मा की पुकार
- सैनिक की व्यथा
- कोबरा का मौन युद्ध
- कोरागुडा हिल्स के रण बांकुरे
- कोबरा:सामुहिक एवं जन जागरूकता कार्यक्रम
- पुकारती वसुंधरा
- मोबाइल महाराज की महिमा
- “साहस सृजन” कोबरा के पराक्रम की अमर गाथा



श्री दानेश राणा, भा.पु.से.  
महानिरीक्षक  
Sh. Danesh Rana, IPS  
Inspector General



कोबरा सेक्टर मुख्यालय,  
सिविल लाइन्स, दिल्ली  
CoBRA Sector HQR.  
Civil Lines, Delhi-54



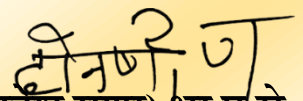
## संदेश

हिंदी दिवस-2025 के शुभ अवसर पर कोबरा सेक्टर मुख्यालय की 'साहस सृजन' पत्रिका का यह विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका न केवल कोबरा के अधिकारियों एवं जवानों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि हिंदी भाषा के गौरव और राष्ट्रीय एकता में उसकी भूमिका को पुनः स्मरण करने का भी उपयुक्त साधन है। हिंदी हमारी मातृभाषा ही नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय स्मिता की जीवनदायिनी धारा भी है। यह हमें एक सूत्र में बाँधती है और विविधताओं के बीच एकता का संदेश देती है।

'साहस सृजन' पत्रिका कोबरा के अधिकारी एवं जवानों द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रदर्शित उनके धैर्य, साहस एवं आत्मोत्सर्ग का संपूर्ण परिचय कराती है कि किस तरह हमारे जवान राष्ट्र की सुरक्षा एवं अखंडता के अभेद कवच हैं। उनका पराक्रम केवल रणभूमि तक सीमित नहीं है, वरन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सृजनात्मकता, संवेदनशीलता और राष्ट्रभक्ति का आलोक फैलाता है। हमारे वीर जवान शौर्यगाथाएं लिखने के साथ-साथ साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा का उत्कृष्ट परिचय दे रहे हैं। यह पत्रिका हमारे कर्मवीरों के हृदय-स्पंदनों, उनके स्वपनों, विचारों तथा कल्पनाओं की जीवंत अभिव्यक्ति है, जो हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी।

इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल हिंदी भाषा के महत्व को रेखांकित कर रहे हैं, बल्कि उन जांबाज वीरों के प्रति सच्ची श्रद्धा भी अर्पित कर रहे हैं, जिन्होंने राष्ट्र की अखंडता और सुरक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर किया है। उनकी गाथाएं निश्चित ही हमें निरंतर प्रेरित करती रहेंगी और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग बनाए रखेंगी।

हिंदी दिवस की शुभकामनाओं के साथ मैं, इस पत्रिका के संपादकीय मंडल, लेखकों और सभी सहयोगियों को इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह पत्रिका सभी के लिए अत्यंत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

  
(दानेश राणा) भा.पु.से.

श्री विनय कुमार राय,  
उप महानिरीक्षक  
Sh. Vinay Kumar Rai  
Dy. Inspector General



कोबरा सेक्टर मुख्यालय,  
सिविल लाइन्स, दिल्ली  
CoBRA Sector HQr.  
Civil Lines, Delhi-54



## संदेश


‘साहस सृजन’ के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे सेक्टर की विविध गतिविधियों, प्रेरक कार्यक्रमों एवं अद्वितीय उपलब्धियों की जीवंत झलक प्रस्तुत करती है, बल्कि कोबरा के जांबाज वीरों की निष्ठा, पराक्रम और समर्पण की भी सशक्त अभिव्यक्ति है।

‘साहस सृजन’ कोबरा की बहुआयामी प्रतिभा, रचनात्मकता एवं अदम्य साहस का सजीव दर्पण है। इसमें संकलित कविताएँ, लेख, संस्मरण एवं अन्य साहित्यिक रचनाएँ हमारे जवानों के भीतर छिपी सांस्कृतिक समृद्धि और सृजनशील ऊर्जा को उजागर करती हैं, जो निश्चित ही सभी पाठकों को प्रेरणा से ओत-प्रोत करेंगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु जिन समर्पित रचनाकारों एवं संपादकों ने अपना योगदान दिया है, उनके प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी का यह सामूहिक प्रयास निश्चित ही कोबरा सेक्टर की एकता, प्रतिबद्धता और सांस्कृतिक चेतना की एक अनुपम मिसाल है।

आपकी प्रतिभा हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है अतः आपसे अपेक्षा है कि आगामी अंकों के लिए अपने मूल्यवान रचनात्मक योगदान और सुझावों से इस सृजन यात्रा को निरंतर प्रगति की ओर ले जाने में सहयोग करें।

‘साहस सृजन’ का यह प्रथम अंक आप सभी के उत्साह, समर्पण और पराक्रम को समर्पित है। आशा करता हूँ कि यह आपके मन में नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करेगा।

  
(विनय कुमार राय)

श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय  
उप महानिरीक्षक (संभरण/लेखा0)  
Sh. Dinesh Pratap Updahyay,  
Dy. Inspector General (P&A)



कोबरा सेक्टर मुख्यालय,  
सिविल लाइन्स, दिल्ली  
CoBRA Sector HQR.  
Civil Lines, Delhi-54




## संदेश

अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि कोबरा सेक्टर की ओर से इस वर्ष वार्षिक पत्रिका 'साहस सृजन' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। कोबरा सेक्टर मुख्यालय द्वारा इस पत्रिका के माध्यम से सेक्टर तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों को जोड़ने एवं एकजुट करने के प्रयासों की मैं दिल से सराहना करता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'साहस सृजन' पत्रिका के माध्यम से कोबरा सेक्टर की विविध गतिविधियाँ, बहुआयामी रचनात्मक प्रतिभाएँ तथा उल्लेखनीय उपलब्धियाँ पूरे बल के कार्यालयों और संस्थानों तक भी प्रभावी एवं सशक्त रूप से पहुंचेंगी। यह पत्रिका हमारे जवानों के अदम्य साहस, अपार समर्पण और उत्कृष्ट प्रतिभा का सजीव दर्पण बनेगी एवं उनके हृदय में गर्व और प्रेरणा का संचार करेगी।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन को सफल बनाने में अपने समर्पित प्रयासों से योगदान देने वाले समस्त रचनाकारों एवं संपादन मंडल को मैं हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। आपका यह अभिनव प्रयास कोबरा परिवार की एकता और उत्साह का परिचायक है।

आशा है कि 'साहस सृजन' आगामी वर्षों में भी इसी प्रकार निरंतर प्रकाशित होती रहेगी और हमारे वीर जवानों की प्रेरणादायक कथाओं तथा रचनात्मक प्रस्तुतियों को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती रहेगी।

  
(दिनेश प्रताप उपाध्याय)



श्री कैलाश,  
कमाण्डेन्ट (संभरण/लेखा0)  
Sh. Kailash,  
Commandant (Prov/Accts)



कोबरा सेक्टर मुख्यालय,  
सिविल लाइन्स, दिल्ली  
CoBRA Sector HQr.  
Civil Lines, Delhi-54



## संदेश

कोबरा सेक्टर मुख्यालय की ओर से इस वर्ष 'साहस सृजन' नामक प्रथम वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन उत्तम ही प्रशंसनीय है। इस अंक को ऐसा स्वरूप देने का प्रयास किया गया है, जो न केवल पूरे वर्ष भर की गतिविधियों, आयोजन एवं उपलब्धियों को एक सूत्र में पिरोता है, बल्कि हमारे कर्मठ जवानों की छुपी प्रतिभाओं, अभिव्यक्तियों और रचनात्मक विचारों को मंच भी प्रदान करता है।

'साहस सृजन' कोबरा परिवार की रचनात्मक सोच एवं संगठनात्मक प्रतिबद्धता का सूचक है। इस पत्रिका के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि यह मंच सेक्टर के अधिकारियों और जवानों की प्रतिभाओं को एक सूत्र में जोड़ते हुए, उनके भीतर छिपी हुई प्रतिभा, विचारों और अनुभूतियों को सार्थक स्वर प्रदान कर सकें।"

इस पत्रिका के लिए सेक्टर के अधीनस्थ कार्यालयों और जवानों द्वारा दिया गया उत्साह, समर्पण एवं समयबद्ध सहयोग यह प्रमाणित करता है कि कोबरा सेक्टर न केवल अपने कार्यों में उत्कृष्ट है, बल्कि रचनात्मकता और सोच में भी समृद्ध एवं सशक्त है।

हमें आशा है कि 'साहस सृजन' का यह अंक आप सभी के लिए न केवल जानकारी का स्रोत होगा, बल्कि प्रेरणा, उत्साह और आत्मबल का संचार भी करेगा।

  
(कैलाश)

श्री सूरज सिंह फोगाट,  
कमाण्डेन्ट (प्रशा0/प्रशि0)  
Sh. Suraj Singh Phogat,  
Commandant (Adm/Trg)



कोबरा सेक्टर मुख्यालय,  
सिविल लाइन्स, दिल्ली  
CoBRA Sector HQr.  
Civil Lines, Delhi-54




## संदेश

यह हमारे लिए अपार गर्व और हर्ष का विषय है कि कोबरा सेक्टर मुख्यालय की प्रेरणा एवं अथक प्रयासों से वार्षिक पत्रिका 'साहस सृजन' का यह नवीनतम अंक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे सेक्टर की विविध गतिविधियों, उत्कृष्ट कार्यक्रमों और अद्भुत उपलब्धियों को परिलक्षित करती है, बल्कि हमारे जांबाज जवानों के अदम्य साहस, निष्ठा और समर्पण की अमिट छाप भी प्रस्तुत करती है।

'साहस सृजन' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि कोबरा परिवार की नई ऊर्जा और सृजनशीलता का प्रतीक है। यह हमारे जवानों की बहुविध प्रतिभा, उनकी प्रेरणादायक कहानियाँ और समर्पण को संजोती है। इस नवप्रकाशित संस्करण के साथ हम एक नए अध्याय की शुरुआत कर रहे हैं, जो हमारे साहस, निष्ठा और उत्साह को एक साथ जोड़कर एक सशक्त संदेश देता है।

यह पत्रिका हमारे जवानों की प्रतिभा, प्रतिबद्धता और विचारशीलता की एक सशक्त झलक प्रस्तुत करती है, जो निश्चित रूप से पाठकों के मन को छूने और उन्हें प्रेरित करने में सक्षम है।

मैं आप सभी के इस उत्कृष्ट सहयोग के लिए हृदय से शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ और यह अपेक्षा करता हूँ कि 'साहस सृजन' के आगामी अंकों में भी नई ऊर्जा, नवीन विचार और रचनात्मक दृष्टिकोण की निरंतरता बनी रहे।

  
(सूरज सिंह फोगाट)



श्रीमती सरिता शर्मा,  
सहायक कमांडेंट ( राजभाषा )  
Smt. Sarita Sharma,  
Asstt. Comdt. (O.L.)



कोबरा सेक्टर मुख्यालय,  
सिविल लाइन्स, दिल्ली  
CoBRA Sector HQr.  
Civil Lines, Delhi-54



सह-संपादिका की कलम से—



हिंदी दिवस हमारी राष्ट्रभाषा के गौरव का पर्व है। यह दिन हमें उस ऐतिहासिक क्षण का स्मरण कराता है, जब 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह निर्णय मात्र प्रशासनिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्वाभिमान की पुनर्स्थापना था।

भारत की विविधता में निहित एकता का सबसे सशक्त माध्यम यदि कोई भाषा है, तो वह है - हिंदी भाषा। यह वह भाषा है, जो उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक हृदयों को जोड़ती है, भावनाओं को पिरोती है और राष्ट्र के ताने-बाने को एक सूत्र में बांधती है। हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, अपितु शासन, विज्ञान, तकनीक और जननीति की सशक्त वाहिका बन चुकी है।

आज हिंदी दिवस के पावन अवसर पर प्रकाशित 'साहस सृजन' का यह अंक हमारे उस बलिदान और समर्पण की गाथा है, जो कोबरा के वीर सपूतों ने देश की रक्षा और सम्मान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर किया है। पत्रिका के इस अंक में समाहित लेख, कविताएं और विचार हमारे वीर जवानों के अदम्य साहस और देशभक्ति की गाथा का संग्रह होने के साथ-साथ भाषा के प्रति सम्मान का द्योतक भी है। इसमें निहित संदेश हमें निश्चित रूप से यह प्रेरणा देता है कि हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि संवेदनाओं और सृजनात्मक ऊर्जा की भाषा है।

आइए, हम सभी इस प्रयास को एक प्रेरणा के रूप में स्वीकार करें और हिंदी को केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि साहस, संवेदना और सृजन की भाषा के रूप में भी आत्मसात करें।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सरिता शर्मा)









## पदक : बलिदान, साहस और समर्पण का प्रतीक



भारतीय सुरक्षा बलों की गौरवशाली परंपरा में **Commando Battalion for Resolute Action (CoBRA)** का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। यह बल नक्सलवाद विरोधी अभियानों के लिए गठित किया गया है और अपनी स्थापना से लेकर अब तक अदम्य साहस, शौर्य और बलिदान की मिसाल कायम करता आया है।

कोबरा के जांबाज कमांडो न केवल देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि वे राष्ट्र की अखंडता और एकता के सच्चे प्रहरी भी हैं। इस बल की बहादुरी का प्रमाण है कि इसके वीर जवानों को देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कारों और अलंकरणों से सम्मानित किया गया है।

नीचे दी गई तालिका में CoBRA के द्वारा अर्जित प्रमुख पदकों का विवरण प्रस्तुत है :-

पदक	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	कुल
कीर्ति चक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	4	5
शौर्य चक्र	8	1	3	3	4	0	2	0	4	0	25
पीपीएमजी	0	0	1	0	0	0	0	0	2	0	3
पीएमजी	29	19	29	56	59	03	18	23	79	43	358
पराक्रम पदक	31	4	21	47	36	43	03	35	50	20	290
जीवन रक्षा पदक	5	0	0	0	0	0	1	0	0	1	7
डीजी डिस्क	583	460	439	582	686	524	267	302	770	444	5057
कुल	656	484	493	688	786	570	291	360	905	512	5745

ये पदक केवल सम्मान नहीं, बल्कि शौर्य और निष्ठा की मिसाल हैं। ये केवल धातु की छवियाँ नहीं, बल्कि उन अनगिनत बलिदानों और संघर्षों की प्रतिमूर्ति हैं, जो CoBRA के जवानों ने अपने कर्तव्य पालन में झेलीं। हर पदक के पीछे छुपी है एक कहानी — एक जवान की वीरता की, जिसने देश की रक्षा के लिए अपनी जान की परवाह न की। CoBRA की ये उपलब्धियाँ हमारे राष्ट्र की मजबूती का प्रतीक हैं, जहाँ हर विजय में एक कमांडो की मेहनत और अडिग इरादे झलकते हैं।

## “वीरों को विनम्र नमन: कोबरा के शौर्य को ‘कीर्ति चक्र’ से अलंकृत”



सिपाही/जीडी  
शहीद भृगु नन्दन चौधरी



निरीक्षक /जीडी  
शहीद दिलीप कुमार



हव./जीडी  
शहीद राजकुमार यादव



सिपाही /जीडी  
शहीद संभू राय



सिपाही /जीडी  
शहीद बब्लू राभा



“शौर्य की ज्योति बुझती नहीं,  
बलिदान व्यर्थ जाता नहीं।”

वीरता के इतिहास में कोबरा के कीर्ति चक्र से सम्मानित इन पांच पराक्रमी योद्धा सिपाही भृगु नन्दन चौधरी, 205 कोबरा, निरीक्षक दिलीप कुमार दास, हवलदार राजकुमार यादव, सिपाही संभू राय और सिपाही बब्लू राभा, 210 कोबरा के नाम शाश्वत रूपी प्रकाश के साथ हमेशा के लिए प्रकाशमय हो गए हैं। इन पराक्रमी योद्धाओं ने छत्तीसगढ़ की घातक रणभूमि में सीपीआई (माओवादी) और पीएलजीए (पीपल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी) जैसे सशक्त, संगठित और निर्मम दुश्मनों के विरुद्ध दृढ़ संकल्प और अदम्य साहस का परिचय दिया। इन्होंने दुश्मन के प्राणघाती हमलों को नाकाम कर, राष्ट्र की अखंडता और सुरक्षा के लिए अपने कर्तव्य की शिखा को बलिदान की वेदी पर अर्पित कर दिया। प्राणों की सर्वोच्च आहुति देकर ये वीर जवान भारत माता के अमर सम्मान और गौरव के जीवित स्तंभ बन गए हैं।

इनके इस शौर्य को राष्ट्र नमन करते हुए राष्ट्रपति भवन में आयोजित रक्षा अलंकरण समारोह में इन्हें मरणोपरांत भारत के दूसरे सबसे बड़े शांति-कालीन वीरता पदक ‘कीर्ति चक्र’ से अलंकृत किया गया। यह सम्मान इनकी वीरता का ही नहीं, बल्कि संपूर्ण सीआरपीएफ और राष्ट्र के लिए गौरव की बात है। इनका सर्वोच्च बलिदान न केवल राष्ट्र के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हुआ है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी कर्तव्यनिष्ठा, साहस और देशभक्ति की अमर प्रेरणा देता रहेगा।

“रक्त की हर बूंद तिरंगे में रंग भरती है,  
बलिदान की गाथा इतिहास में अमर रहती है।”









## 210 कोबरा के शौर्य और बलिदान की वीर गाथा (सिपाही/जीडी शहीद सोलंकी मेहुलभाई नन्दलालभाई)



राष्ट्र सेवा के पावन भाव से परिपूर्ण, सोलंकी मेहुलभाई नन्दलालभाई का जन्म 04 अप्रैल, 1992 को गुजरात के भावनगर जिले के देवगाना गाँव में हुआ था। अपनी मैट्रिक की शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत, उन्होंने 07 अक्टूबर, 2014 को इस महान बल (केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) में शामिल होकर देश सेवा का मार्ग चुना। आर.टी.सी.-चार, श्रीनगर से अपना बुनियादी प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने के पश्चात, उन्होंने 21वीं बटालियन में पदस्थ होकर राष्ट्र की सेवा प्रारंभ की। उनके हृदय में बचपन से ही राष्ट्र प्रेम और सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी, जो उन्हें कर्तव्य पथ पर अडिग बनाए रखती थी।

शहीद सिपाही/जीडी सोलंकी मेहुलभाई नन्दलालभाई का स्थानांतरण 24 जुलाई, 2021 को, जंगल युद्ध कौशल में दक्ष, **210 कोबरा (COBRA - Commando Battalion for Resolute Action)** बटालियन में हुआ। यहाँ उन्होंने चार्ली कंपनी में पदस्थ होकर, छत्तीसगढ़ में प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) के विरुद्ध अभियानों में अपने कर्तव्यों का वीरतापूर्वक निर्वहन करना जारी रखा। 21 मई, 2025 को एक विशिष्ट खुफिया जानकारी के आधार पर, वे एक चुनौतीपूर्ण नक्सल विरोधी अभियान पर निकले। अगले दिन, 22 मई, 2025 को, तुमरेल के समीप घने और बीहड़ जंगल क्षेत्र में, सशस्त्र सीपीआई (माओवादी) आतंकियों ने स्वचालित हथियारों और बीजीएल (बैरल ग्रेनेड लॉन्चर) से अचानक भीषण हमला बोल दिया। इस प्राणघाती हमले के दौरान, उन्होंने तत्काल जवाबी कार्रवाई की तथा अपने साथियों को आगाह करते हुए उन्हें बचाने में निर्णायक भूमिका निभाई। इस भयंकर गोलीबारी में, अदम्य साहस का परिचय देते हुए, उन्होंने सीधे मोर्चा लिया और एक दुर्दांत नक्सली को मार गिराने में सफलता प्राप्त की।

परंतु दुर्भाग्यवश, इस साहसिक अभियान के दौरान माओवादियों की घातक गोलीबारी में वे गम्भीर रूप से घायल हो गए। बावजूद इसके, अपने अदम्य साहस, अटूट धैर्य और देशभक्ति की भावना से वे डटकर मुकाबला करते रहे। उन्होंने बिना किसी भय के दुश्मनों की गोलीबारी का सामना किया और अपने निर्भीक संघर्ष से उन्हें पीछे हटने को मजबूर कर दिया। इस कठिन परिस्थिति में वे स्वयं भी गंभीर रूप से घायल हो गए। टीम के उपचारक ने तुरंत उनकी जान बचाने के लिए प्राथमिक चिकित्सा प्रदान किया, परंतु गंभीर एवं गहन चोटों के कारण वे राष्ट्र सेवा करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए।

शहीद सिपाही/जीडी सोलंकी मेहुलभाई नन्दलालभाई की यह अद्वितीय शहादत, राष्ट्र के इतिहास में **स्वर्णाक्षरों में अंकित** रहेगी। संपूर्ण राष्ट्र उनकी वीरता का सदैव ऋणी रहेगा और उन्हें नमन करता है।

मिट्टी की खुशबू में लहू मिला, वीर सपूत हंसते हंसते चला।

देश के खातिर प्राण लूटा गया, शहादत से अमरत्व पा गया ॥

## 209 कोबरा बटालियन के पराक्रम की अमर गाथा (सिपाही/जीडी प्रणेश्वर कोच)



महानिरीक्षक, झारखंड सेक्टर से प्राप्त खुफिया जानकारी के अनुसार, सहदेव सोरेन उर्फ अनुज उर्फ प्रवेज सीएमएस और चंचल उर्फ रघुनाथ हेम्ब्रम उर्फ बिसेन विशेष क्षेत्र समिति के सदस्य, कुंवर मांझी उर्फ सहदेव मांझी, सब-जोनल कमांडर मालोंग सीपीआई माओवादी के 8-10 हथियारबंद टुकड़ी के साथ काशीडिह, अंबलाना, बिशुडेरा एवं बिलयोताड़ा, थाना गुमिया, जिला बोकारो, झारखंड के जंगलों में सक्रिय हैं।

इस गंभीर सूचना के आधार पर महानिरीक्षक (ऑप्स) झारखंड सेक्टर, उप महानिरीक्षक (ऑप्स) बोकारो, कमांडेंट 209 कोबरा एवं पुलिस अधीक्षक बोकारो ने एक सुनियोजित और प्रभावशाली ऑपरेशन की योजना बनाई। श्री दीपक भाटी, कमांडेंट 209 कोबरा के निर्देशन में ऑपरेशन संख्या 46 (बोकारो-III) को दो प्रमुख टीमों - टीम 07 एवं टीम 09 को विशेष कार्यभार सौंपा गया। टीम 09 का नेतृत्व चीता बलमुरुगन एन. ने किया, जबकि टीम 07 को कट-ऑफ पार्टियों की जिम्मेदारी दी गई। 15 जुलाई, 2025 की रात को रहवां कैंप से प्रस्थान कर, दोनों टीमों सावधानीपूर्वक एवं रणनीति के साथ 16 जुलाई की मध्यरात्रि इंडक्शन पॉइंट पर पहुंचीं। सुबह 0545 बजे टीम 09 के नेतृत्व में टुकड़ी जब माओवादी ठिकाने की ओर बढ़ रही थी, तो नक्सलियों ने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। जवानों ने तत्परता दिखाते हुए सुरक्षित आवरण ग्रहण किया और आत्मसमर्पण का आह्वान किया, लेकिन नक्सलियों ने गोलीबारी जारी रखी। इस भीषण मुठभेड़ में सिपाही/जीडी प्रणेश्वर कोच ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अग्रिम पंक्ति में डटकर नक्सलियों का मुकाबला किया। इस दौरान घायल होने के बावजूद भी, उन्होंने अपनी बहादुरी से कई साथियों की जान बचाई। हालांकि उन्हें तत्परता से प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उन्होंने 16 जुलाई 2025 को देश की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

मुठभेड़ लगभग ढाई घंटे तक जारी रही। चीता बालामुरुगन एन. एवं चीता डी. प्रज्वल वासुदेव ने साहसपूर्वक नेतृत्व करते हुए नक्सली हमले को नाकाम किया। गोलीबारी रूकने के पश्चात मुठभेड़ स्थल की विस्तृत तलाशी के दौरान जवानों ने 02 नक्सलियों का शव बरामद किए जिनमें से एक की पहचान कुंवर मांझी उर्फ सहदेव मांझी, सब-जोनल कमांडर और एक अन्य अज्ञात शव के रूप में हुई। साथ ही 01 ए.के.-47 राइफल, जिंदा कारतूस, मैगजीन, युद्ध सामग्री, रसद एवं नक्सलियों के दैनिक उपयोग की वस्तुएं बरामद की गईं। इसके अतिरिक्त मुठभेड़ स्थल पर नक्सलियों का एक ठिकाना भी मिला।

इस भीषण मुठभेड़ के दौरान जवानों ने अद्वितीय युद्ध-कौशल, उत्कृष्ट जंगल रणनीति, अदम्य साहस एवं अद्वितीय वीरता का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप 50 लाख का इनामी सब-जोनल कमांडर कुंवर मांझी उर्फ सहदेव मांझी को ढेर कर दिया गया। इस अभियान में 209 कोबरा बटालियन के जवानों ने अनुशासन, समर्पण और वीरता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। शहीद प्रणेश्वर कोच और उनकी टीम के इस तरह के अदम्य साहस को शत-शत नमन। उनका बलिदान हमें सदैव प्रेरित और उत्साहित करता रहेगा और पूरा देश उनके योगदान को सदैव याद करता रहेगा।

वीर सपूत जो देश पर मरे, उनके किस्से अमर रहें।

हर सांस में उनका नाम, हर दिल में उनका मान रहे ॥



## “साहस सृजन”-वीरता और सृजनशीलता का अद्भुत संगम



अशोक कुमार  
(पी.एम.जी.\*\*\*\*)  
कमांडेंट 210 कोबरा

‘साहस सृजन’ पत्रिका अपने नाम के अनुरूप ऊर्जा, प्रेरणा, गौरव और उपलब्धि का प्रतीक है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि कोबरा के जांबाजों की अदम्य धैर्य-शक्ति, वीरता और राष्ट्र के प्रति समर्पण की जीवंत गाथा है।

विपरीत और दुर्गम परिस्थितियों में अद्वितीय साहस, दृढ़ आत्मविश्वास, अद्भुत अनुशासन और निस्वार्थ बलिदान की मिसाल प्रस्तुत करने वाले कोबरा के वीर जवान, भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय अखंडता के अटूट प्रहरी हैं। यही कारण है कि ‘साहस सृजन’ का प्रत्येक अंक, वीर जवानों के अदम्य पराक्रम एवं स्वर्णिम सृजनशीलता का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है।

**कोबरा का अप्रतिम साहस:-** ये वे योद्धा हैं जिन्होंने घने वनों और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में छिपे असामाजिक तत्वों का सामना कर समाज में शांति और विश्वास बहाल किया है। संकटग्रस्त क्षेत्रों में, जहां सामान्य जीवन कठिन हो जाता है, वहीं कोबरा के जांबाज अपने साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति से एक नई आशा और सुरक्षा की ज्योति प्रज्वलित करते हैं।

**सृजनशीलता का अनुपम स्वरूप :-** साहसिकता के साथ-साथ, कला और चिंतन के क्षेत्र में भी जवानों की प्रतिभा उतनी ही उज्ज्वल है जितना कि रण भूमि में। ‘साहस सृजन’ इसी जीवंत सृजनशीलता का सशक्त मंच है, जो उनके मनोभावों, विचारों और अनुभवों को प्रेरणा में रूपांतरित करता है। पत्रिका के प्रत्येक लेख, कविता और संस्मरण केवल रचनाएं नहीं, बल्कि राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और बलिदान की अमिट प्रेरणा के वाहक हैं। यहां कविताएं जन्म लेती हैं, कहानियां आकार पाती हैं, विचार पंख फैलाते हैं और अनुभव प्रेरणा का रूप लेते हैं। यह पत्रिका अपने आप परिपूर्ण है तथा इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है :-

- वीर जवानों की शौर्यगाथाओं का अमरकरण,
- उनकी रचनात्मक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना,
- कोबरा परिवार के साथ-साथ समाज को प्रेरित करना, तथा
- यह संदेश देना कि ‘ सच्चा साहस वही है, जो कठिनाइयों को अवसर में बदल दे। ’

**राष्ट्र के लिए संदेश:-** ‘साहस सृजन’ के प्रत्येक पृष्ठ यह उद्घोष करता है कि राष्ट्र की सेवा केवल रणभूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि कलम और विचारों की शक्ति से भी संभव है। यह पत्रिका विश्वास दिलाती है कि जब तक हमारे बीच ऐसे निर्भीक, दूरदर्शी और सृजनशील योद्धा मौजूद हैं, तब तक कोई भी चुनौती हमारे संकल्प को डिगा नहीं सकती।

‘साहस सृजन’ उन तमाम वीरों को समर्पित है, जिनके साहस ने इतिहास रचा और जिनकी सृजनशीलता भविष्य का मार्ग आलोकित कर रही है। यह पत्रिका कोबरा परिवार के लिए शौर्यगाथाओं, सृजनशीलता और समर्पण की जीवंत धरोहर है, जो हमें निरंतर स्मरण कराती है कि -  
**“जहां साहस है, वहीं सृजन है।”**

## हिन्दी दिवस :: मातृभाषा का गौरव



कैलाश  
कमांडेंट,  
कोबरा सेक्टर

‘जैसा कि सभी को विदित है कि भारत में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। जब किसी भी दिन को किसी विशेष उपलक्ष्य के लिए सुरक्षित कर दिया जाता है तो यह स्वाभाविक है कि उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होगा। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी बन जाती है कि विशेष समारोह अथवा दिवस के आयोजन से पूर्व उसके पीछे का इतिहास जानकर उसका तात्विक एवं तार्किक विश्लेषण कर लें। जब हिन्दी दिवस की बात करते हैं तो पहला सवाल जो मन में आता है, वह है कि 14 सितंबर ही क्यों? इसका उत्तर जानने की जिज्ञासा में जो तथ्य सामने आता है, वह यह है कि 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था और यही कारण है कि इस दिन को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसका मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार है। इस दिवस को महत्वपूर्ण बनाने के लिए तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा सभी सरकारी संस्थानों में कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। कहीं पर यह कार्यक्रम साप्ताहिक होते हैं तो कहीं पखवाड़े के रूप में मनाए जाते हैं।

भारत जैसे बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश, जहां विभिन्न संस्कृति एवं धर्म के लोग अनेक भाषाएं बोलते हैं, वहां हिन्दी भाषा एक कड़ी के रूप में लोगों को जोड़ने का काम करती है। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं है बल्कि एक भाव है और यदि यह भाव है तो केवल साप्ताहिक और द्विसाप्ताहिक रूप में कैसे प्रदर्शित किया जा सकता है? यह एक बड़ा सवाल है। जिस प्रकार हम पितृ पक्ष में अपने पित्रों का श्राद्ध करते हैं और नवरात्रों में देवी का पूजन करते हैं, उसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि हम बाकी दिनों में अपने पित्रों या भगवानों का स्मरण नहीं करते या उनका आदर नहीं करते। ठीक उसी प्रकार हमें हिन्दी सप्ताह या हिन्दी पखवाड़े के इतर भी हिन्दी का उतना ही सम्मान एवं प्रयोग करना चाहिए जितना इन दिनों किया जाता है। यह चिंता का विषय है कि भारत में हिन्दी जैसी भावाभिव्यक्ति की भाषा के प्रचार-प्रसार एवं महत्वता के लिए हमें किसी खास दिवस की प्रतीक्षा रहती है।

ऐसा नहीं है कि अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रभाव से हिन्दी भाषा का महत्व कम हो गया है। यह हमारी मानसिकता है जो हमें ऐसा सोचने पर मजबूर करती है। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को जानने-सीखने का अर्थ यह नहीं है कि हिन्दी भाषा का स्थान गौण हो गया है। हम गलती तब करते हैं जब हम अंग्रेजी भाषा बोलने वाले की तुलना में हिन्दी भाषा बोलने वाले व्यक्ति को कमतर आंकते हैं। हम भाषा को ज्ञान का आधार मान लेने की भूल कर बैठते हैं जबकि वह संप्रेषण का माध्यम है और ऐसी स्थिति में हिन्दी बोलने वाले व्यक्ति का मनोबल कमजोर होता है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम हिन्दी बोलने वाले व्यक्ति को प्रोत्साहित करें ताकि हिन्दी भाषा के साथ-साथ हिन्दी-भाषी व्यक्ति का भी विकास हो सके।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी-भाषा और साहित्य में इतने महान साहित्यकार हुए हैं जिनका प्रभाव शिक्षित और अशिक्षित जनता पर समान रूप से पड़ा है। उदाहरण के लिए हम सूर, कबीर, तुलसी, प्रेमचंद आदि को देख सकते हैं। कबीर के दोहे और तुलसी का मानस आज भी लोगों की जुबान पर है, यह हिन्दी भाषा की ताकत है। हमारी हिन्दी भाषा के प्रभाव, महत्व और शक्ति का ही परिणाम है कि आज इंग्लैंड, अमेरिका, फिजी, नेपाल, मॉरीशस जैसे विदेशी राष्ट्रों में भी हिन्दी बोलने के साथ-साथ पढ़ी-पढ़ाई भी जाती है।

भारत में हिन्दी केवल कामकाज की ही भाषा नहीं है बल्कि हमारी प्रसन्नता, अवसाद, अंतर्द्वंद्व, क्रोध, हर्षोल्लास, इत्यादि भावों को प्रकट करने वाली भावात्मक भाषा है। हमें इसका ज्ञान भी होना चाहिए और अभिमान भी। हिन्दी के महत्वपूर्ण साहित्यकार भारतेन्दु ने भी कहा है कि :-

**'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, विन निज-भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।'**

हिन्दी हमारे मन और मान की भाषा है और हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इसके मान की रक्षा करते हुए इसके निरंतर विकास में अपना योगदान दें और किसी विशेष दिवस, सप्ताह, पखवाड़े की प्रतीक्षा न करते हुए संपूर्ण वर्ष हिन्दी में बात करें, कार्य करें, कार्यक्रम आयोजित करें और बिना किसी हिचकिचाहट के हिन्दी पर गर्व करते हुए स्वयं भी गौरव का अनुभव करें।

धन्यवाद।







## साहस के सेनानी: ना रुकें, ना झुकें



धरती की हर एक सांस को  
सुरक्षित करने चले हम लोग ।  
आंधी हो या तूफान,  
हर मोर्चे पर रहे हैं चौकस जवान ॥

खून-पसीने की सौगंध लिए,  
हर मुश्किल से हम भिड़ते हैं ।  
सीने पर गोली खाकर भी,  
मुस्कानों से जीते हैं ॥

ना दिन की चाह, ना रात की फिक्र,  
देश के वास्ते हर एक दृष्टि ।  
सीमा से लेकर सड़कों तक,  
हर कोना हमारा कत पथ ॥

सीआरपीएफ, नाम है गौरव का,  
हर दिल में बसता है इसकी जयकारा ।  
सृजन हो या हो पराक्रम का संग्राम,  
हम हैं भारत की रक्षा के ब्रह्मास्त्र महान ॥

सि/जीडी- अविनाश कुमार सिंह  
बी/207 कोबरा

सीना तान खड़े जो रण में, मौत को भी मात सिखाएं, देश हेतु हंसते हंसते, अपने शीश चढ़ा ही जाएं॥  
वीर वही जो संकट आने, पीठ कभी ना मोड़ दिखाएं, अमर कथा लिखे जो जग में, शौर्य ध्वजा नभ में लहराए॥



## हल्लर की प्रतिज्ञा



- सहा0 उप निरी0 महावीर सिंह, कोबरा सेक्टर

हरे-भरे खलियान ये मेरे, मेरे परिवार का सहारा थे,  
माँ धरती की कोख से निकले, ये खलियान हमारे प्यारे थे।  
दिन-रात मेहनत हमने की, खेतों को ऐसे सजाया था,  
सपनों की सौगात थी हममें, हर बीज में प्रेम लगाया था।

बच्चों सा लाड़ दिया हमने, माता-पिता सा स्नेह भी किया,  
ये खेती नहीं, मेरा जीवन था, जिससे दिल से प्यार किया।  
कुछ तो होगी उसकी मजबूरी, जो विधि ने ऐसा विधान लिखा,  
वर्षा, आंधी, तूफानों ने, खड़ी फसल का विनाश किया।

माना कि तू है सृष्टि का दाता, प्रलय तेरे नतमस्तक हैं,  
पर मैं भी हूँ इक हलधर, अटल प्रतिज्ञा मेरी दस्तक है।  
तुम कितने खलियान उजाड़ोगे, मैं उतना प्रखर निखारूंगा,  
तुम हर बार खेती उजाड़ोगे, मैं हर बार खेत लहराऊंगा।

वो आज नहीं तो कल होगा, इस रात का भी हल होगा,  
कल सोने सा जो चमकेगा, वो अन्न मेरा सफल होगा।  
इक बार पूर्ण जीवित होगी, मेरे जीवन की ये रीत होगी,  
हरे-भरे खलियान ये मेरे, सपनों की मेरी जीत होगी।



## वीर जवानों की गाथा

वीर जवानों का दल, देश की आन बान शान ।

दुश्मन के छक्के छुड़ाए, हर मुश्किल को पार लगाए ।

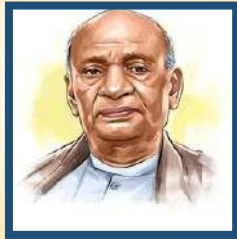
सीमाओं का पहरा, हरदम तत्पर ना कोई ठहरा ।

आतंक का काल, देशभक्ति का ज्वलंत भाल ।

सेवा और निष्ठा उनका सर्वोच्च धर्म, हर पल देश के लिए समर्पित,  
आतंक के अंधकार में भी वे बने उम्मीद की रोशनी, हर चुनौती से अनथक लड़ित।  
उनके बलिदान से ही हमारा भारत सुरक्षित और महान,  
उनकी वीरता को नमन, है हमारे दिलों का अभिमान।



सि/जीडी नरेन्द कुमार पासवान  
डी/207 कोबरा



यह हर एक भारतीय का कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की सेवा करे  
और उसके लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दे।





## जय हो... जय हो...सी.आर.पी.एफ.

जय हो.. जय हो, भारत के वीर जवानों की जय हो,  
सी.आर.पी.एफ. का गान बजे, वीरता का सम्मान बजे।

धरती से आकाश तक, गूँजे उनका नाम,  
सीना ताने बढ़ते जाएं, रखते देश का मान ।

बारूद की आंधी में, निडर कदम बढ़ाए,  
हर मुश्किल से लड़ते, पराक्रम न जताए ।

नक्सल की धनी छाया हो, या आतंक का ठिकाना,  
सी.आर.पी.एफ. के जवान, न डरें किसी बहाना ।

रात की तन्हाई में, जलती है मशाल,  
माँ भारती की रक्षा में, बढ़े हर हाल ।

हिमालय की बर्फ में या रेगिस्तान की तपिश,  
बारिश में भीगें जब भी, न हटे इनके पसीने की रिश।

साँसों में साहस हो, दिल में सम्मान,  
सी.आर.पी.एफ. के हैं, ये सच्चे अमर जवान ।

त्याग और समर्पण, ये कहानी है महान,  
हर जवान, हर प्रहरी है देश का अभिमान ।

आओ मिलकर करें सलाम, श्रद्धा के संग प्रणाम,  
CRPF के वीरों का, हो जयघोष हर ग्राम ।

सिपाही/जीडी पवन मिश्रा,  
एफ / 206 कोबरा

## कोबरा : कठोर प्रशिक्षण और साहस से निर्मित जंगलों का अजेय प्रहरी

शेख वसीम रजा, सहा0 कमा0  
नियंत्रण कक्ष अधिकारी, कोबरा सेक्टर

“कठोर परिश्रम, सुनिश्चित विजय”- इस प्रेरक मूलमंत्र ने कोबरा को नक्सलवाद के विरुद्ध लड़ाई में निर्णायक कमांडो बल के रूप में स्थापित किया है। कॉम्बैट बटालियन फॉर रेसॉल्यूट एक्शन (कोबरा), जिसे ‘Roaring Tiger (रणगर्जन बाघ)’ के नाम से जाना जाता है, एक विशेष कमांडो बल है, जिसे अत्यंत कठिन और घने जंगलों में आतंकवाद विरोधी संचालन के लिए तैयार किया जाता है। यह न केवल कमांडोज है, बल्कि जंगल युद्ध में परागत, साहस और अनुशासन की जीवंत मिसाल भी हैं।

कोबरा का प्रशिक्षण केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता और आत्मनियंत्रण की एक कठिन परीक्षा है। जैसा कि प्रसिद्ध मार्शल आर्टिस्ट ब्रूस ली ने कहा था, “मैं उस आदमी से नहीं डरता जिसने 10,000 अलग-अलग किक्स का अभ्यास किया हो, बल्कि उस आदमी से डरता हूँ जिसने एक ही किक का 10,000 बार अभ्यास किया हो।” यही सिद्धांत कोबरा के प्रशिक्षण का मूल मंत्र है। इसका प्रमाण CoBRA स्कूल ऑफ जंगल वॉरफेयर एंड ट्रेनिंग (CSJW&T), बेलगावी में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहाँ अधिकारियों/जवानों को एलीट कमांडो के रूप में गढ़ा जाता है। यह प्रशिक्षण संस्थान कमांडोज को केवल कौशल में नहीं, अपितु उन्हें निखार कर उत्कृष्टता की चरम सीमा तक ले जाता है। यह कमांडो प्रशिक्षण विंग विशेष रूप से विश्व के सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण जंगल अभियानों के लिए जंगल योद्धा तैयार करता है। यहां पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कोबरा कमांडो जंगल योद्धा की अदम्य भावना का प्रतीक बन चुका है। इन कमांडोज को सख्त और अनुशासित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से गढ़ा जाता है, जो प्रशिक्षण के पश्चात अपनी अदम्य शक्ति और दृढ़ निश्चय के साथ अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होते हैं।

कोबरा कमांडोज का चयन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अलग-अलग संस्थानों/कार्यालयों से किया जाता है। चयनित अधिकारी/जवानों को CoBRA स्कूल ऑफ जंगल वॉरफेयर एंड ट्रेनिंग (CSJW&T), बेलगावी में 10 सप्ताह के अत्यंत कठोर और व्यापक प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है। यह प्रशिक्षण शारीरिक, मानसिक एवं सामरिक दृष्टि से उनकी क्षमताओं को विकसित करता है। जंगल युद्ध कमांडो का प्रशिक्षण दूरगामी सोच के साथ डिजाइन किया गया है ताकि समय के साथ बदलते परिवेश और संभावित खतरों का सामना किया जा सके। यह प्रशिक्षण न केवल जंगल में चरमपंथी खतरों का मुकाबला करने के लिए है, बल्कि घने जंगल, प्रतिकूल मौसम और अलगाववादियों की चुनौतियों से भी निपटने में मदद भी करता है।



- पसीना जितना प्रशिक्षण में बहेगा, खून उतना ही कम रणभूमि में बहेगा।
- प्रशिक्षण की आग में तपकर ही, वीरता की तलवार तेज होती है।
- बिना प्रशिक्षण के कोई वीर नहीं बनता, केवल प्रयास ही इतिहास रचता है।

प्रशिक्षण की शुरुआत पहले दो सप्ताह के लिए शारीरिक और मानसिक मजबूती को विकसित करने से होती है, जिसमें अनुशासन, धैर्य, अनुकूलन क्षमता और टीमवर्क की सीख दी जाती है। इसके पश्चात निशानेबाजी, छुपने-फिरने की कला, जंगल युद्ध की रणनीतियाँ, जीवित रहने की तकनीकें और नेविगेशन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। जैसे-जैसे प्रशिक्षण आगे बढ़ता है, कमांडोज को उन्नत नेविगेशन तकनीकें और रात में संचलन की रणनीतियाँ सिखाई जाती हैं, जो उन्हें सबसे कठिन और अपरिचित इलाकों में, यहाँ तक कि पूर्ण अंधेरे में भी, सुरक्षित और प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने में सक्षम बनाती हैं। यह समन्वित और गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम सुनिश्चित करता है कि हमारे कमांडोज न केवल युद्ध के लिए तैयार हों, बल्कि खतरनाक इलाकों और विद्रोही हिंसा की दोहरी चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मविश्वास, कौशल और अडिग संकल्प के साथ मानसिक रूप से भी तैयार हों।

प्रशिक्षण का सबसे चुनौतीपूर्ण एवं निर्णायक चरण 'हेल वीक' है, जिसमें कमांडोज की शारीरिक और मानसिक सहनशीलता की कठोर परीक्षा ली जाती है। इस दौरान प्रशिक्षण को अनियमित एवं अप्रत्याशित समय पर कराया जाता है, जिससे उनकी प्राकृतिक दिनचर्या बाधित होती है और वे हर परिस्थिति में सतर्क, चुस्त एवं त्वरित प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनते हैं। 'हेल वीक' का मुख्य उद्देश्य किसी भी प्रकार की कमजोरी, लापरवाही या पूर्वानुमेयता को दूर करना है, क्योंकि वास्तविक ऑपरेशन में एक भी छोटी चूक मिशन की सफलता को प्रभावित कर सकती है। यह चरण कमांडोज को हर स्थिति में तैयार, अनुशासित एवं सशक्त बनाए रखता है।

इसके पश्चात आता है 'जंगल सर्वाइवल' परीक्षण जो प्रशिक्षण का अंतिम और निर्णायक चरण है। इस दौरान कमांडोज को सीमित संसाधनों और न्यूनतम उपकरणों के साथ जंगल में अकेले एक सप्ताह बिताना होता है, जहां उनकी जीवित रहने की कला, संसाधनों का सही उपयोग, मानसिक दृढ़ता, धैर्य और रणनीतिक कौशल की परीक्षा होती है। यह चरण उन्हें पूर्णतः आत्मनिर्भर, सक्षम और मिशन-तैयार योद्धा बनाता है।

कोबरा की बहादुरी और उत्कृष्टता की पहचान उनके द्वारा प्राप्त राष्ट्रीय पुरस्कारों से होती है, जो उनके अटूट समर्पण और अदम्य साहस का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भारत सरकार ने कोबरा के अधिकारियों एवं जवानों द्वारा प्रदर्शित असाधारण शौर्य और बलिदान को मान्यता देते हुए उन्हें निम्नलिखित पदकों से सम्मानित किया है, जो कोबरा कमांडोज की उत्कृष्टता और साहसिकता की सजीव अभिव्यक्ति हैं:

- 5 कीर्ति चक्र
- 25 शौर्य चक्र
- 3 राष्ट्रपति पुलिस पदक (गैलेंट्री)
- 358 पुलिस पदक (गैलेंट्री)
- 290 पराक्रम पदक

कोबरा का गौरवशाली इतिहास केवल एक विरासत नहीं, बल्कि अदम्य साहस, अटूट समर्पण और उत्कृष्टता की अमिट गाथा है, जिसकी कीमत कई कोबरा वीर कमांडोज ने अपने प्राणों की आहुति देकर चुकाई है। देश की रक्षा के इस पावन कार्य में अब तक 76 बहादुर कोबरा कमांडोज और 2 वफादार K9 साथी शहीद हो चुके हैं। उनकी अमर शहादत इस सत्य का साक्ष्य है कि देश सेवा का मार्ग केवल सम्मान से नहीं, अपितु अपार त्याग, कठोर तपस्या और अथक संघर्षों से होकर गुजरता है।

उनके अदम्य साहस और बलिदान की विरासत हर नए कमांडो के हृदय में सदैव जीवंत रहती है, जो CSJW&T के द्वार से प्रशिक्षण लेकर सम्मान और जिम्मेदारी की भावना के साथ देश सेवा के लिए तैयार होकर निकलते हैं। यही कारण है कि हर कोबरा कमांडो गर्व और आत्मविश्वास के साथ कहता है—

**“संग्रामे पराक्रमी जयी” अर्थात्—‘जो संग्राम में पराक्रमी है, वही सच्चा विजेता है।’**



## कोबरा : वीरता, रणनीति और अदम्य साहस की मिसाल

सिपाही/जीडी बंकर रूषिकेश

207 कोबरा



भारतीय अर्धसैनिक बलों की विशेष **CoBRA (Commando Battalion for Resolute Action)** का गठन देश में आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने और वामपंथी उग्रवाद से प्रभावी ढंग से निपटने के उद्देश्य से किया गया था। इस उद्देश्य की पूर्ति में 207 CoBRA बटालियन को एक रणनीतिक, समर्पित और कुशल बटालियन के रूप में स्थापित किया गया है।

207 कोबरा का इतिहास वीरता, शौर्य और अनुशासन से भरा हुआ है। बटालियन के कमांडो ने बीहड़ जंगलों, दुर्गम पहाड़ियों और विषम परिस्थितियों में जिस साहस के साथ माओवादी उग्रवादियों के खिलाफ सफलता पाई है, वह किसी भी सैन्य बल के लिए गर्व का विषय है। इन कमांडो की कार्यशैली विशेष होती है। वे गहन जंगल युद्ध (Jungle Warfare), गुरिल्ला टैक्टिक्स, रात्रि गश्त और तलाशी अभियानों में प्रशिक्षित होते हैं। 207 कोबरा की टीम कई सफल अभियानों में भाग ले चुकी है, जहां इन्होंने न केवल उग्रवादियों को नियंत्रण में रखा, बल्कि स्थानीय जनता का विश्वास जीतकर नागरिक प्रशासन के माध्यम से विकास और सहयोग की मिसाल भी कायम की है।

बटालियन ने समय-समय पर विशेष ऑपरेशनों, जैसे “Operation KGH” आदि में भाग लेकर दुश्मनों के इरादों को नाकाम किया है। जंगलों में ऑपरेशनों के दौरान उपकरणों, नए और अनुकूलित गियर के उपयोग से लेकर संचार तंत्र की मजबूती तक इनकी तैयारी उत्कृष्ट होती है। कई ऑपरेशनों में 207 कोबरा के जवानों ने अपनी जान की परवाह किए बिना देश सेवा में साहसिक भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त, 207 कोबरा के कमांडो ने नवाचार, तकनीकी कौशल और सामुदायिक सहभागिता के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है।

आज, जब हम “साहस सृजन” के माध्यम से कोबरा बटालियनों की अद्वितीय कुशलता, अदम्य साहस और समर्पण को हार्दिक नमन करते हैं। यह बटालियन न केवल अनुशासन की मिसाल हैं, बल्कि देशभक्ति और निष्ठा का अमिट प्रतीक भी हैं।



## अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कोबरा का प्रेरणादायी आयोजन

दिनांक 08 मार्च, 2025 को “अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस” क्षेत्रीय सीआरपीएफ परिवार कल्याण संस्था के कुशल नेतृत्व में 210 कोबरा बटालियन कैम्प में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए श्रीमती सपना नेगी, अध्यक्ष, क्षेत्रीय परिवार कल्याण संस्था, 210 कोबरा बटालियन ने अपने संबोधन में कहा कि यह विशेष दिन महिलाओं की उपलब्धियों का सम्मान करने, उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और समाज में उनकी भागीदारी को सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। इस विशेष अवसर पर दरंग जिला के अपर पुलिस अधीक्षक को मुख्य अतिथि एवं केंद्रीय विद्यालय, खारूपेटिया के प्राधानाचार्य को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया और इन दोनों ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर नारी सशक्तिकरण का परिचय दिया। कार्यक्रम की शुरुआत दरंग जिला के अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सीआरपीएफ द्वारा संचालित ‘परिवार कल्याण संस्था’ के परिचय के साथ हुई जिसमें महिलाओं के संघर्ष, उनकी उपलब्धियों और सशक्तिकरण की दिशा में संगठन द्वारा किए जा रहे प्रयासों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। संबोधन के दौरान श्रीमती सपना नेगी ने कहा कि ‘क्षेत्रीय परिवार कल्याण संस्था’ अपने आदर्श वाक्य –‘सार्थक सहयोग सर्वदा’ में विश्वास करते हुए निरंतर अपने लक्ष्य के प्रति अग्रसर है। उन्होंने यह भी कहा कि समूचे विश्व में महिलाओं के प्रति सम्मान और स्नेह का ऐसा माहौल विकसित हो, जहाँ महिलाएं एवं हमारी बच्चियां सुरक्षित तथा स्वतंत्र हों और उनको सम्मानजनक तरीके से जीवन यापन करने का हक मिल सके।



दरंग जिला के अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा 08 मार्च, 2025 को “अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस” समारोह का उद्घाटन करते हुए

कार्यक्रम के दौरान श्री अशोक कुमार, कमांडेंट-210 कोबरा बटालियन ने यह कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति में महिलाओं को विशेष दर्जा प्राप्त है। आदिकाल से महिलाएं हमारी संस्कृति की धरोहर को न सिर्फ अपने आंचल में समेटे हुए हैं, बल्कि उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी, रीतियों, रिवाजों और रस्मों, व्यंजनों तथा पकवानों एवं लोकगीतों व लोकनृत्यों की परंपरा से अपनी संतानों को अवगत कराती आई है। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं ने अपनी त्याग और तपस्या की शक्ति से भारतीय संस्कृति को सींचा व पाला-पोसा है क्योंकि “महिला ही हमारे समाज की आदर्श शिल्पकार और नींव है।”

राहुल सिंह  
सहायक कमांडेंट-210 कोबरा







## “साहस, समर्पण और सफलता: 210 कोबरा की गौरवगाथा”



रमेश कुमार पाण्डेय  
निरीक्षक (हिंदी अनुवादक)

भारत में बढ़ते वामपंथी उग्रवाद (एल.डब्ल्यू.ई.) ने 2000 के दशक में आंतरिक सुरक्षा के समक्ष गंभीर चुनौती पेश की। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में दुर्गम जंगलों, पहाड़ी इलाकों और सघन वनस्पति वाले भूभाग में पारंपरिक पुलिस बलों के लिए प्रभावी कार्रवाई करना कठिन था। इस चुनौती से निपटने के लिए भारत सरकार ने 12 सितंबर, 2008 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अंतर्गत एक विशेष कमांडों कोबरा बटालियन के गठन की स्वीकृति दी। कोबरा बटालियन का उद्देश्य केवल नक्सलवाद से निर्णायक मुकाबला करना ही नहीं था, बल्कि दुर्गम और शत्रुतापूर्ण वातावरण में तेज, सटीक और निर्णायक कार्रवाई करने में सक्षम एक ऐसा बल तैयार करना था, जो ‘जंगल युद्ध और गुरिल्ला रणनीति’ में निपुण हो। इसी को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2009 में पहली कोबरा सक्रिय हुई और धीरे-धीरे आज कोबरा की कुल 10 बटालियन अपने निर्णायक मोड़ पर खड़ी हैं।

इसी शृंखला में, 210 कोबरा का औपचारिक गठन 27 जुलाई, 2010 को असम राज्य के अंतर्गत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ग्रुप सेंटर, खटखटी (असम) में किया गया। शुरूआती दिनों में इस बटालियन का मुख्य फोकस पूर्वोत्तर क्षेत्र की परिचालनिक आवश्यकताओं और विशेष परिस्थितियों के अनुसार सक्षम बनाना था। तदनुसार, इस बटालियन के स्थापना के पश्चात सी.आई.टी. सिलचर में 12 सप्ताह का कोबरा पी.आई. प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद से यह बटालियन माओवादी हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए अनेक सफलताएं हासिल का चुकी है। असम, ओडिशा, मेघालय और झारखंड जैसे राज्यों के उग्रवाद/माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में अपने कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान कई माओवादियों/नक्सलियों को पकड़ने/निष्क्रिय करने, भारी मात्रा में हथियार व गोला-बारूद बरामद करने और स्थानीय जनसमर्थन प्राप्त करने में बटालियन ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

दिनांक 01 मई, 2012 से 210 कोबरा बटालियन का मुख्यालय स्थायी तौर पर असम राज्य के दरंग जिले के दलगांव में स्थानांतरित किया गया। यहां आने के बाद इस बटालियन ने न केवल प्रशिक्षण और माओवादी विरोधी अभियान के लिए अपनी तैयारी को मजबूत किया है, बल्कि परिचालनिक मोर्चों पर भी अपनी सक्रियता बढ़ाई। छत्तीसगढ़ के माओवादी प्रभावित इलाकों में तैनाती के बाद से ही इस बटालियन ने बस्तर, दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर जैसे कठिन और अति संवेदनशील इलाकों में लगातार अभियान चलाकर अनेक माओवादियों का निष्प्रभावीकरण और आत्मसमर्पण करवाया है तथा बड़ी मात्रा में गोला-बारूद बरामद किया है। यह बटालियन न केवल ऑपरेशन में अग्रणी रही है, बल्कि स्थानीय आबादी के साथ विश्वास निर्माण कर समय-समय पर चिकित्सा शिविरों और विकास कार्यों में भी सक्रिय रही है। 210 कोबरा बटालियन ने अपने अदम्य साहस, अनुशासन और राष्ट्र सेवा की भावना से अपने मिशन को अंजाम देकर सीआरपीएफ की शौर्य परंपरा को और सशक्त किया है।

दिनांक 2-3 अप्रैल, 2021 का दिन 210 कोबरा बटालियन के इतिहास में एक दर्दनाक और अविस्मरणीय रूप में दर्ज है। इस दिन छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों के विरुद्ध चलाए गए एक अभियान के दौरान इस बटालियन के कुछ जांबाज वीरगति को प्राप्त हो गए। इस घटना ने न केवल पूरे बल को शोकाकुल किया, बल्कि इसने माओवादियों की चुनौती के सामने एक नई रणनीति और नए उत्साह के साथ खड़े होने की आवश्यकता को भी उजागर किया। ऐसे कठिन और संवेदनशील समय में बटालियन को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता थी, जो न केवल रणनीतिक रूप से सक्षम हो, बल्कि अपने साहस, अनुभव और कर्तव्यनिष्ठा से जवानों के मनोबल को पुनः ऊंचाईयों तक पहुँचा सके। इसी उद्देश्य से चार बार ‘वीरता पुलिस पदक’ (पी.एम.जी.) से अलंकृत, अदम्य साहस और कुशल नेतृत्व के प्रतीक श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी (वर्तमान में कमांडेंट) को 210 कोबरा की कमान दिसंबर, 2021 में सौंपी गई।



श्री अशोक कुमार के नेतृत्व में आने के बाद से बटालियन ने माओवादी विरोधी अभियान की योजना, खुफिया जानकारीयों का संकलन और तकनीक के प्रभावी प्रयोग पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। इन्होंने जवानों में फिर से वही जोश और विश्वास जगाने के लिए विशेष प्रशिक्षण, सामूहिक अभ्यास और रणनीतिक परामर्श सत्र आयोजित किए। इनका मानना है कि 'जवान का मनोबल ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है'। इसलिए टीम भावना, अनुशासन और उच्च मनोबल को पुनः स्थापित करते हुए, इन्होंने जवानों को न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत बनाया। इनका कार्य केवल एक बटालियन का नेतृत्व करना नहीं था, बल्कि अपने वीर साथियों के बलिदान को सार्थक बनाना और माओवादियों को करारा जवाब देना भी था।

आज इनके नेतृत्व का ही प्रतिफल है कि बटालियन के जवान चाहे तपती धूप, बरसात या सर्दी ही क्यों न हो, राष्ट्र की सेवा में सदैव समर्पित होकर अपने प्राणों की परवाह किए बगैर परिचालनिक ड्यूटियों का सकुशल निर्वहन करते हुए नित नई मिसाल कायम कर रहे हैं। 210 कोबरा द्वारा छत्तीसगढ़ में माओवादियों के प्रभावित क्षेत्र में वर्ष 2021 से 2025 के दौरान चलाए गए ऑपरेशन के दौरान प्राप्त की गई उपलब्धियों को देखने मात्र से यह प्रतीत होता है कि इनका नेतृत्व स्तर अपने आप में विशेष एवं उच्च दर्जे का है:-

छत्तीसगढ़ में 210 कोबरा बटा. द्वारा अर्जित उपलब्धियां (2021-2025)									
वर्ष	कुल ऑपरेशन	ए.एन.ई. को निष्क्रिय किया गया	गिरफ्तारी	आत्मसमर्पण	हथियार	गोला-बारूद	आईईडी सं./कि.ग्रा.	एचई ग्रेनेड/बम	अन्य रिकवरी
2021	189	02	07	-	04	26	01/05	05	79
2022	147	-	15	-	07	10	01/05	05	35
2023	200	-	07	01	-	-	04/12.5	-	39
2024	350	39	69	22	37	157	29 नग	07	140
2025	169	76	73	52	72	632	204 नग	02	229

किसी भी ऑपरेशन को अंतिम रूप देने से पहले रणनीति बनाना बहुत ही आवश्यक होता है ताकि माओवादियों के प्रभावित क्षेत्र में उनकी गतिविधियों को नियंत्रित कर सुनियोजित ढंग से बिना किसी नुकसान के ऑपरेशन को अंजाम दे सके। इसी को ध्यान में रखकर वर्ष 2024-25 के दौरान कुल 11 एफ.ओ.बी. ( फॉरवर्ड ऑपरेटिंग बेस ) निम्नानुसार लगाया गया है :-

2024-2025 के दौरान छत्तीसगढ़ में नए एफ.ओ.बी. की स्थापना					
वर्ष	क्र.सं.	कैंप का विवरण	से	तक	ट्रूप्स की भागीदारी
2024	1.	टेकलगुरियम	30.01.2024	06.02.2024	210 कोबरा की 08 टीम
	2.	गुंडम	14.02.2024	18.02.2024	210 कोबरा की 08 टीम
	3.	फुतकेल	23.02.2024	27.02.2024	210 कोबरा की 03 टीम
	4.	चुटवाही	02.03.2024	07.03.2024	210 कोबरा की 09 टीम
	5.	कुंडापल्ली	12.11.2024	17.11.2024	210 कोबरा की 09 टीम
	6.	वट्टे वागु	19.12.2024	23.12.2024	210 कोबरा की 09 टीम
2025	1.	पीडीया	21.01.2025	25.01.2025	210 कोबरा की 03 टीम
	2.	गुंजेरपट्टी	07.02.2025	09.02.2025	210 कोबरा की 05 टीम
	3.	पुजारीकांकेर	12.02.2025	15.02.2025	210 कोबरा की 05 टीम
	4.	भीमाराम	03.03.2025	05.03.2025	210 कोबरा की 09 टीम
	5.	कुरचौली	09.03.2025	12.03.2025	210 कोबरा की 09 टीम

यहाँ यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि कुशल नेतृत्व की बदौलत 210 कोबरा ने सदैव अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहते हुए उच्चतम स्तर का अदम्य साहस, अपार त्याग, पराक्रम और असीम शौर्य प्रदर्शित करने में अग्रणी रही है। इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के परिणामस्वरूप इस

बटालियन को अब तक कुल 514 विभिन्न सम्मानित पदकों से अलंकृत किया जा चुका है। इन पदकों में चार 'कीर्ति चक्र' भी सम्मिलित हैं, जो 5 जुलाई, 2024 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित रक्षा अलंकरण समारोह-2024 (चरण-1) के अवसर पर इस बल के चार वीर योद्धा—निरीक्षक दिलीप कुमार दास, हवलदार राजकुमार यादव, सिपाही बबलू राभा और सिपाही संभू राय—को मरणोपरांत प्रदान किए गए। यह भारत का दूसरा सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार है, जिसने इन वीरों के नाम को वीरता के इतिहास में सदैव के लिए स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर दिया है। राष्ट्र उनकी प्रतिबद्धता और बलिदान पर गर्व महसूस करता है तथा देश सदैव उनके परिजनों का ऋणी रहेगा।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्री अशोक कुमार, कमांडेंट (पी.एम.जी.\*\*\*\*) के कुशल नेतृत्व का परिणाम है कि 210 कोबरा बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों द्वारा परिचालन क्षेत्र में प्रदर्शित किए गए उनके अदम्य साहस एवं कर्तव्य परायणता की मान्यता में वर्ष 2024 के लिए एस.ओ.जेड. के अंतर्गत 210 कोबरा बटालियन को 'सर्वोत्तम ऑप्स कोबरा बटालियन' के ताज से अलंकृत किया गया है जो निश्चित ही 210 कोबरा बटालियन के पूरे संवर्ग के अधिकारियों एवं जवानों के लिए अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है। इससे पूर्व 210 कोबरा बटालियन को पूर्वोत्तर जोन 2013-14 के लिए सर्वोत्तम ऑप्स बटालियन और 2014-15 के लिए कोबरा सेक्टर की सर्वोत्तम ऑप्स बटालियन ट्रॉफी से सम्मानित किया गया है जो कोबरा बटालियन के लिए अत्यंत ही हर्ष एवं गौरव का विषय है।



**श्री अशोक कुमार, कमांडेंट 210 कोबरा बटालियन को 'सर्वोत्तम ऑप्स कोबरा बटालियन ट्रॉफी' प्रदान करते हुए  
श्री ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, भा.पु.से., महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल**

अंततः यह भी वर्णित करना समीचीन होगा कि आज 210 कोबरा ने इनके नेतृत्व में यह साबित किया है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, दृढ़ संकल्प, सही रणनीति और टीम वर्क की भावना से हर चुनौती को पार किया जा सकता है। जैसे उन्होंने अपनी रणनीति के साथ माओवादियों के सफाए के लक्ष्य के प्रति समर्पित भाव से अग्रसर होकर कार्य किया है, यह निश्चित ही भारत के सहकारिता एवं गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के छत्तीसगढ़ राज्य को मार्च, 2026 तक माओवाद मुक्त घोषित करने के सपने को साकार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आशा है कि आने वाले समय में छत्तीसगढ़ राज्य माओवादी संकट से मुक्त होकर इसके नागरिक अमन-चैन के साथ अपनी जीवन यात्रा को प्रकृति की गोद में व्यतीत करेंगे और विकसित राष्ट्र निर्माण की परिकल्पना को साकार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

**"हर नया दिन एक नया मौका है, अपने लक्ष्य के करीब जाने का।"**







## ऑपरेशन के.जी.एच.: 204 कोबरा की वीर गाथा

कमांडेंट 204 कोबरा

मार्च 2025 में यह सूचना प्राप्त हुई कि प्रतिबंधित संगठन सी.पी.आई. (माओवादी) के पी.एल.जी.ए. कैडर छत्तीसगढ़-तेलंगाना सीमा पर स्थित कोरागुट्टालू पहाड़ (केजीएच) में डेरा डाले हुए हैं। यह क्षेत्र दुर्गम पर्वतीय भूभाग, प्राकृतिक गुफाओं और चट्टानों से घिरा हुआ है, जहाँ माओवादियों ने बड़ी संख्या में आई.ई.डी. लगाकर प्रवेश मार्गों को जाल की तरह सुरक्षित बना रखा था।

वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा-निर्देशन में छत्तीसगढ़ पुलिस (एसटीएफ एवं डीआरजी) तथा सीआरपीएफ की कोबरा बटालियनों ने संयुक्त योजना तैयार की। यह निर्धारित हुआ कि ऑपरेशन केजीएच दोनों राज्यों की सीमा से एक साथ प्रारंभ किया जाएगा—तेलंगाना राज्य की सीमा की ओर से 204 कोबरा और छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा की ओर से 210 कोबरा को अग्रिम मोर्चे पर भूमिका निभाने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

कठिन भूभाग और हर कदम पर छिपे खतरे के बावजूद, कमांडेंट के नेतृत्व में 204 कोबरा के कोबरा कमांडोज ने साहस और धैर्य के साथ लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में काम किया और माओवादियों के संभावित हमलों को नाकाम किया। सर्च अभियान के दौरान माओवादियों के ठिकाने का पता चला, जहाँ वे ग्रामीणों की भांति छिपे हुए थे। तत्पश्चात, कमांडोज ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए माओवादियों के ठिकाने को नष्ट कर कई सामग्रियाँ बरामद कीं।

केजीएच ऑपरेशन के दौरान, 25 अप्रैल 2025 को प्राप्त गुप्त सूचना के आधार पर 204, 201 और 208 कोबरा की संयुक्त टुकड़ियों ने गांव जोला एवं आसपास के क्षेत्रों में गहन तलाशी अभियान चलाया। कई स्थानों पर आईईडी मिलीं, जिन्हें मौके पर निष्क्रिय कर दिया गया। इसी दौरान एक आईईडी ब्लास्ट में 201 कोबरा का एक जवान घायल हो गया, जिसे 204 कोबरा के चिकित्सा अधिकारी ने प्राथमिक उपचार प्रदान किया और तत्पश्चात एयरलिफ्ट कर विशेष उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया।

अभियान के दूसरे चरण का आरंभ 3-4 मई 2025 को हुआ। 204 कोबरा की तीन कंपनियां तेलंगाना सीमा से बढ़ते हुए छत्तीसगढ़ सीमा की ओर अग्रसर हुईं। संदिग्ध क्षेत्रों की तलाशी के दौरान माओवादियों ने अचानक फायरिंग और आईईडी ब्लास्ट करके हमला किया। इस हमले में सिपाही/जीडी धनुराम, 151 बटालियन (204 कोबरा के साथ संलग्न) गंभीर रूप से घायल हो गए। संकट की इस घड़ी में सहायक कमांडेंट श्री बोराडे सागर गणेश एवं सहायक कमांडेंट श्री गवाड़े विलास बिच्छे ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना घायल जवान को सुरक्षित निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।





परंतु संघर्ष यहीं समाप्त नहीं हुआ। लगातार फायरिंग और एक आईईडी ब्लास्ट के कारण सहायक कमांडेंट श्री बोराडे सागर गणेश तथा उनका साथी सिपाही/जीडी अपूर्वा कलिता गंभीर रूप से घायल हो गए। प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को तुरंत एयरलिफ्ट कर रायपुर के नारायण अस्पताल भेजा गया, जहाँ श्री बोराडे सागर गणेश के बाएं पैर को घुटने के नीचे एम्प्यूट किया गया और बेहतर इलाज के लिए बाद में उन्हें एम्स दिल्ली स्थानांतरित किया गया, जहाँ वे वर्तमान में उपचाराधीन हैं।

इन घटनाओं ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि कोबरा कमांडोज केवल लड़ाकों की टुकड़ी नहीं, बल्कि एक परिवार की तरह हैं। इस अभियान के दौरान सहायक कमांडेंट श्री बोराडे सागर गणेश ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए अपने साथियों को बचाने के लिए अदम्य साहस, शौर्य, भाईचारा और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया, जो सुरक्षा बलों के लिए प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है।

ऑपरेशन केजीएच न केवल कोबरा बटालियन, बल्कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के गौरवपूर्ण इतिहास में भी एक चुनौतीपूर्ण एवं महत्वपूर्ण अभियान के रूप में दर्ज हो गया है। यह उन दुर्लभ अभियानों में से एक था, जिसे नक्सलवाद से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों की सीमाओं पर अत्यंत कठिन एवं दुर्गम पर्वतीय इलाकों में अंजाम दिया गया। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों, प्रतिकूल मौसम और नक्सलियों की रणनीतिक चुनौतियों के बावजूद कोबरा बटालियन ने अपने असाधारण शौर्य और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। परिणामस्वरूप, नक्सलवादी गतिविधियों को गहरा आघात पहुंचा और वे दक्षिण दिशा की ओर भागने को मजबूर हो गए।



इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 204 कोबरा बटालियन सहित सभी सहभागी बलों का ऑपरेशन केजीएच केवल एक सैन्य अभियान नहीं था, बल्कि यह कोबरा बटालियन के शौर्य, बलिदान और अनुशासन की एक ऐसी कहानी है, जिसे सदैव याद रखा जाएगा। इस अभियान ने कोबरा कमांडोज की उस क्षमता को सिद्ध किया है, जो हर कठिन परिस्थिति का सामना कर राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा की रक्षा हेतु सदैव तत्पर रहती है।

**हमें हार नहीं माननी चाहिए और समस्या को हमें हराने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।**

**– ए पी जे अब्दुल कलाम**



## कंठस्थ 2.0 अनुवाद एक प्रतिभागी की दृष्टि से



कोबरा सेक्टर मुख्यालय में अगस्त 07, 2025 को 1100 बजे श्री नानक चंद, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली की अध्यक्षता में कंठस्थ 2.0 अनुवाद टूल के प्रभावी एवं अधिकतम प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

कार्यशाला में कंठस्थ 2.0 सॉफ्टवेयर की विशेषताओं और कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। इस सॉफ्टवेयर के उपयोग से दस्तावेजों के निर्माण, अनुवाद, संपादन और प्रबंधन की प्रक्रिया आसान और प्रभावी बन जाती है। यह कार्यशाला तकनीकी दक्षता बढ़ाने, कार्यकुशलता सुधारने तथा समकालीन डिजिटल उपकरणों के सही उपयोग को समझने का एक उत्तम अवसर थी। कार्यशाला के दौरान तकनीकी प्रशिक्षण के साथ-साथ संवाद कौशल और समय प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा हुई, जो कार्यस्थल पर सहयोग और कार्य क्षमता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इस कार्यशाला ने मुझे डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को अपडेट रखने और नई तकनीकों को अपनाने की प्रेरणा मिली जिसका सीधा प्रभाव मेरे कार्य क्षेत्र और व्यक्तिगत विकास दोनों पर पड़ा है। आयोजित कार्यशाला मेरे लिए अत्यंत ही ज्ञानवर्धक, व्यावहारिक और प्रेरणादायक रही।

**निष्कर्ष :-** “कंठस्थ सॉफ्टवेयर सरकारी कार्यालयों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित होगा। यह न केवल कार्यों को सरल और प्रभावी बनाता है, बल्कि कार्यालय के समग्र कार्यकुशलता और प्रभावशीलता को भी बढ़ावा देता है। आधुनिक डिजिटल युग में ऐसी तकनीकों को अपनाना संस्थान की प्रगति और दक्षता के लिए अति आवश्यक है।”



सहा० उप निरी० महावीर सिंह  
कोबरा सेक्टर

“हिंदी अपने सहज रूप में जितनी सरल है, उतनी ही सामर्थ्यवान भी है।”

—हजारी प्रसाद द्विवेदी



## भूले-बिसरे जीवन की गूँज

ओडिशा-छत्तीसगढ़ सीमा पर नक्सल- विरोधी अभियान के दौरान, मेरा स्काउट अचानक ठिठक कर घुटनों के बल बैठ जाता है। वह मुझे नदी के दूसरी छोर संदिग्ध हलचल की सूचना देता है। हम तुरंत एक दूरबीन निकालते हैं और वह दूरबीन मुझे नदी के एक मोड़ के पास कुछ हल्की-सी हलचल की ओर इशारा करता है।

हमें नदी के किनारे लगभग चार महिलाएं कपड़े धोती हुई दिखाई देती हैं और हम सांस रोककर उनकी पहचान करने का इंतार करते हैं। इस निर्जन इलाके में, पानी की कुछ हल्की लहरें भी किसी असामान्यता की आभास कराती हैं। हम दलदली जमीन पर चलते हुए बस्ती के पास पहुंचते हैं। वहां हमें सिर्फ तीन झोपड़ियों वाला एक गांव मिलता है। झोपड़ियों में दीवारें नहीं हैं, बस अस्थायी फूस की छतें हैं। फिर हम देखते हैं कि कुछ बच्चे एक वयस्क के साथ बिखरे हुए कंचों की तरह झुंड में बैठे थे। वे खुले चुल्हे पर जंगली बीज और कुछ लाल चींटियां भून रहे थे। पास ही धुंए की हल्की लकीर उठ रही थी, मानो ठहरना चाहता हो। हमारी उपस्थिति से वे विचलित नहीं हुए। वे अपने काम में लगे रहे जैसे स्थिर पानी, जिसमें पत्थर डालने पर भी लहरे पैदा नहीं होतीं। या शायद, भय ने उनकी प्रतिक्रियाओं को जकड़ लिया हो।

इस बीच मेरी टीम ने बस्ती को घेर लिया। मैं और मेरी यूनिट के द्वितीय कमान अधिकारी, श्री जितेंद्र कुमार ने बातचीत का प्रयास किया, लेकिन कोई संवाद स्थापित नहीं हो सका। हम एक दूसरे को देखकर मानो अलग-अलग प्रजाति के जीव प्रतीत हो रहे थे, जिनके बीच अदृश्य दीवार खड़ी हो। भाषाओं का संघर्ष तब तक जारी रहा, जब तक राज्य पुलिस का पुलिस प्रतिनिधि सामने नहीं आया। उसने दोनों ओर के बीच संवाद की कड़ी जोड़ी। तब जाकर हमें पता चला कि ये लोग **भुजिया जनजाति** से हैं। कभी ये लोग किसी गांव में रहते थे, परंतु आपसी झगड़े के कारण विस्थापित होकर यहां आ बसे। वे लोग अपने ही समुदायों से बाहर कर दिए गए थे- मानो कंकड़-पत्थर की तरह फेंक दिए गए हो। कोई उन्हें अपनी दहलीज पर देखना ही नहीं चाहता था। अंततः वे दंडकारण्य के घने जंगलों में स्थायी शरणार्थियों की तरह बस गए। यह भूमि इतनी सुनसान और अपेक्षित है कि भगवान राम के चरण भी यहां शायद न पड़े हो। ऐसे भूले-बिसरे प्रदेश में उन्होंने डेरा डाल लिया। वे उन स्थानों में जड़े जमा लिए हैं, जिनका नाम लेने की भी किसी को परवाह नहीं होती। सिपाही उनसे पूछता है कि आप यहां पर कितने समय से रह रहे हैं? लेकिन मैं सोचता रहा – जिन्हें कोई गिनता ही नहीं, उनके लिए समय का क्या अर्थ होगा?

उत्तर साफ था। उस आदमी को नहीं पता। शायद, उसे बीते दिनों को गिनने की इकाई ही मालूम न हो। सिपाही अंदाजा लगाते हुए पूछा- ‘शायद दो साल?’ वह सिर भी नहीं हिलाता। दो साल उनके लिए क्या मायने रखते हैं? शायद वही जान सकता है।

हमने आस-पास देखा- धनुष, बाण, गुलेल-शिकार का सामान बिखरा पड़ा था। जंगली बांस से बनी एक मछली पकड़ने की जाल उलझी हुई पड़ी थी। उनके पास न कोई काम है, न ही कोई सहारा। वे केवल जंगल से जो कुछ भी जुटा सकते हैं, उसी पर जीवन गुजारते हैं। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत, उन्हें मासिक राशन का हक है, जो वे पास के एक अपेक्षाकृत बड़े गांव से लाते हैं।

मैं, उनसे पूछना चाहता था कि राशन लेते समय वे कौन सा पहचान पत्र दिखाते हैं, पर स्वयं को रोक लिया। ऐसा पूछना मुझे लगा कि उनकी आखिरी गरिमा को भी छीन लेना होगा। मैंने बस यह पूछा- ‘आप दूसरे गांव कैसे जाते हैं?’

‘पैदल’

‘लेकिन नदी तो भरी रहती है।’

‘तैरकर’

‘कितनी दूर है?’

‘दूर’

‘कितनी दूर, जरा ठीक-ठीक बताओं?’

वह झाड़ियों की ओर देखता है, जहां एक मकड़ी अपनी याददाश्त के सहारे जाल बुन रही होती है।

उसने कहा, ‘यदि हम सुबह निकलते हैं, तो दोपहर तक पहुंच जाते हैं।’ उसके हर जवाब में केवल एक सीधा-सा ‘हाँ’ था।

‘क्या यहां भालू आते हैं ? ’ हाँ,

‘बाघ ? ’ हाँ,

‘साप ? ’ हाँ,

‘क्या वे काटते हैं ? ’ हाँ,

‘क्या लोग मरते हैं ? ’ हाँ,

मैंने बच्चों के बीच बैठे एक आदमी के पैर को देखा। उसकी टांगे उपर से नीचे तक छिली हुई लौकी जैसी दिख रही थी— सूखे, तरतदार, घावों से भरी हुई। हमने पूछा, ‘क्या तुम्हें दवा चाहिए ? ’ - वह बोला, ‘नहीं।’

बाकी दो झोपड़ियों में हमें 4-5 औरते दिखाई दीं, शायद उनकी उम्र तीस से चालीस साल की बीच होगी। हर औरत के चारों ओर 8-10 बच्चे खड़े थे, जो कद के बढ़ते क्रम में कतारबद्ध थे। ऐसा लग रहा था, मानो पिछले 8-10 सालों में इन औरतों को मातृत्व से एक वर्ष का भी विश्राम न मिला हो। हर स्त्री के पीछे बच्चे इस तरह खड़े थे जैसे कोई संगीत की धुन क्रमशः ऊँचाई पर चढ़ रही हो, या मानो समय की दीवार पर खींचे बार-चार्ट हों- हर साल एक नया बच्चा। उनका शरीर बभ्रुकिल पतली, फटी हुई साड़ियों के टुकड़ों से किसी तरह ढका हुआ था। जब जंगल में कोई शिकारी आता है, तो हिरणों का झुंड अचानक ठिठककर स्थिर हो जाता है, ठीक वैसे ही ये औरतें भी हमें बिना पलक झपकाए, खाली आँखों से एकटक देखती रही। उनके पीछे छिपे बच्चे झिझकते हुए उत्सुकता से चुपके से हमारी तरफ झाँकते रहे।

हमारी टीम ने उनके लिए अपने पास बचा हुआ थोड़ा-सा नाश्ता निकाला- बिस्कुट, भुजिया और टॉफियां। बच्चे झिझकते हुए आगे बढ़े। उनका व्यवहार वैसा ही था जैसे जीवन भर पीटे हुए कुत्ते, जो डरे-सहमे पूँछ टांगों के बीच दबाए पास आते हैं। वे पहले ठहरकर हवा को सूंघते रहे, मानो यह भरोसा करना चाहते हों कि यह सचमुच उनके लिए है। फिर कांपते हाथों से खाने का सामान उठाया और पलक झपकते ही भागकर वापस अपनी झोपड़ियों में छुप गए।

हमने सिपाही से कहा कि अगर कभी इन्हें सचमुच मदद की जरूरत पड़े, तो वे हमारे कैंप में आ सकते हैं। जब हम वहां से लौटने लगे, तो अपने द्वितीय कमान अधिकारी से पूछा- ‘साहब’ यह कैसी जिंदगी है ? इसमें तो कोई उद्देश्य ही नजर नहीं आता ?’

वह जवाब देते हैं, ‘जिंदगी का कोई उद्देश्य नहीं है। गाय, भैंस, फूल, पौधा, इनमें से किसी का भी कोई उद्देश्य नहीं है। तुम्हारे जीवन का भी कोई उद्देश्य नहीं है। बस किसी ने तुम्हें यह काम सौंप दिया और तुमने इसे अपने जीवन का ‘उद्देश्य’ मान लिया। ‘21वीं सदी में उद्देश्य भी कोई और तय करता है।’

हम कुछ दूर चलते हैं। फिर, मैं रूककर झोपड़ियों की ओर पलटकर देखता हूँ।

वह दृश्य मानो किसी भूले-बिसरे ग्रंथ की टूटी हुई पंक्ति हो, जो दंडकारण्य के अंधेरे जंगल में गुम हो गई हो। घने सन्नाटे में एक मूक तितली पंख फड़फड़ाते हुए मंडरा रही थी- उसके पंख तो थे, पर आवाज नहीं।

चारों ओर अथाह अंधकार था, लेकिन कोई आड़ नहीं।

डर चीखता नहीं-, बल्कि धीरे-धीरे फुसफुसाता है-रूपों में, सन्नाटे में, नजरों में और उस साधारण-सी निराशा में।

वह बेतुकी छवियों में, निस्तब्धता में, टकटकी लगाए निगाहों में और उस अजीब-सी सामान्य निराशा में धीरे-धीरे रिसता रहता है।

कुछ गांव सरकारी आंकड़ों में दर्ज तो जरूर है, लेकिन यह बस्ती ? इसका तो उन कागजों में भी कहीं नाम नहीं। फिर इसकी सुध कौन लेता है ?

उत्तर केवल एक है- सीआरपीएफ।

रितेश सुभाष रणधीर,

सहायक कमांडेंट

207 कोबरा



## मौन में भी जयघोष हूँ मैं

सीमा पर जो खड़ा अकेला, वो भीड़ से संवाद हूँ मैं ।  
बर्फ में भी पिघला करता, धूप में एक शीतलवाद हूँ मैं ।  
मेरी आँखों में नींद नहीं है, पर सपनों का प्रहरी हूँ ।  
घर नहीं लौटता वर्षों तक, फिर भी सबसे अपनत्व धरा हूँ ।  
शब्दों से नहीं बोलता मैं, मौन में भी जयघोष हूँ मैं ।  
कभी पिघलते हिमखंडों सा, कभी तपता ज्वाला हूँ मैं ।  
तुम कभी-कभी राखी बांधना भूल गए, पर मैं मरकर भी वादा निभाऊँ ।  
तिरंगे की वो आखिरी छाया, मुझसे ही उसका मान बचाऊँ ।  
कभी बेटा, कभी भाई बनकर, हर घर की दीवार बना हूँ ।  
देश रहे सुरक्षित हर सांस में, इसलिए बारूद बना हूँ ।

सिपाही/जीडी गजानन मिरगे,

मुख्यालय/207 कोबरा

कोबरा कमांडो की चुप्पी में भी देश की सुरक्षा की गूँज है,  
जो हर बाधा से लड़कर, अपने वतन का अमर प्रहरी बन जाता है ।

जहाँ खतरा हो घना,  
वहाँ कोबरा कमांडो खड़ा,  
मौन में भी गूँजता है देशभक्ति का उद्घोष  
जंगल की हर पगडंडी है,  
हमारी रणभूमि खास,  
कोबरा के कदमों से कांपता है  
दुश्मन का आस-पास,  
घने जंगलों में छिपकर भी,  
जीतते हैं हर जंग,  
देश की हिफाजत में सदैव,  
कोबरा का है संग ।



“जो भाषा अपने मन की बात कह सके,  
वही सच्ची भाषा है- और यह हमारी हिंदी है”

## छांव

यह युद्ध है, सावन नहीं,  
क्यों खोजता तू छांव है?  
कर्म है पावन वही,  
जो करता मोह का संहार है।

रण सजा है सामने,  
खुद को अर्जुन मान ले।  
बाण को तू तान ले,  
और शत्रुज की जान ले।

ओढ़ता जा रहा है अज्ञान का वस्त्र तू,  
कोई अनहोनी न हो, इस भय से ग्रस्त तू।  
कर्म की शैया बना, उसमें भय को संवार दे,  
तू वीरता का पान कर, और लक्ष्य को ललकार दे।

नैन ज्वाला से धधकते हों,  
ना तू इन्हें विश्राम दे।  
वो तेज हो तुझमें भरा,  
देवता भी वरदान दें।

विचार कर, विमर्श कर,  
तेज से खुद को लब्रेज कर।  
भेद दे हर लक्ष्य को,  
यही जीवन का अर्थ है।

अतः सब कुछ व्यर्थ है।  
और युद्ध की मुश्किल घड़ी,  
जब सामने आ खड़ी हो,  
बोले खुद को तुझसे बड़ी,  
तो दहाड़ हो इस प्रकार की—

तू सूर्य है, मैं प्रकाश हूँ,  
तू मृत्यु, मैं महाकाल हूँ।  
मैं अद-अनादी के बाद भी हूँ,  
बस शांति हूँ।



गहन जंगलों में गूँजती है उनकी आवाज़,  
जहाँ छुपा दुश्मन, पहुँचती है उनकी साज़।  
कोबरा के कमांडो हैं शौर्य के सिपाही,  
हर चुनौती में दिखाते पराजय की राह दिखाई।

रणभूमि की आग में नहीं झुकता उनका मन,  
देश के लिए हर पल, हर घड़ी तैयार जवान।  
धैर्य, साहस, सम्मान का है ये अवतार,  
देश की रक्षा में रहते सदा पहरेदार।

अंधकार में बनें रोशनी, डर में भर दें जोश,  
कोबरा की टोली से काँपे दुश्मन का होश।  
देश की आन-बान-शान है ये कमांडो  
बटालियन!  
इनकी वीरता को सदा करे हर दिल सलाम।

सिपाही 202 कोबरा



## रक्तदान : महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर कोबरा का 'महादान'

**“रक्तदानं महादानं प्राणदानसमं समृतम् ।  
जीवनस्य परित्राता भवेत् मानवसेवया ॥ ”**

दिनांक 30 जनवरी, भारत के इतिहास का वह दिन, जब पूरी दुनिया राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करती है, वहीं इसी प्रेरणा को आत्मसात करते हुए 210 कोबरा बटालियन के अधिकारी एवं जवानों ने गांधी जी के पुण्यतिथि पर एक अनूठा संकल्प लिया- “रक्तदान के माध्यम से जीवनदान ।” गांधी जी ने अपने जीवन से हमें यह सिखाया है कि सच्ची देशभक्ति केवल रणभूमि की विजय तक सीमित नहीं, बल्कि सेवा, त्याग और मानवता के उत्थान में भी निहित है ।

इसी को अनुसरण करते हुए 210 कोबरा बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों ने इस पुण्य तिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में जब कतारबद्ध होकर अपनी बारी का इंतजार किया, तो वहां का दृश्य प्रेरणादायी बन गया । वीरता की मिसाल ये जवान, जिन्होंने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अपने साहस का लोहा मनवाया है, अब समाज के लिए “रक्षक से जीवनदाता” बन गए ।



30 जनवरी, 2025 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के पुण्य तिथि पर 210 कोबरा बटालियन द्वारा आयोजित रक्त दान शिविर

इस पुणित अवसर पर श्री अशोक कुमार, कमांडेंट, 210 कोबरा बटालियन ने गांधी जी को स्मरण करते हुए कहा कि-“ गांधी जी की यह सोच थी - स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि खुद को दूसरों की सेवा में खो दिया जाए । आज रक्तदान करके हमें वही संतोष और आत्मबल मिला है ।”

इस पुण्य तिथि पर 210 कोबरा बटालियन ने यह सिद्ध कर दिया है कि वीरता केवल हथियारों की शक्ति में नहीं, बल्कि मानवता की रक्षा और समाज की सेवा में भी दिखाई देती है । “रक्तदान महादान है, यह एक ऐसा पवित्र कार्य है जिससे न केवल जरूरतमंदों को नया जीवन मिलता है, बल्कि समाज में सेवा और सद्भाव की भावना भी मजबूत होती है ।”

- एडज्यूटेंट-210 कोबरा



**“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना  
देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है ।”**

- महात्मा गांधी

38 पृष्ठ

## योग और मानसिक स्वास्थ्य : तनाव भरी जीवनशैली में शांति की चाबी

आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में हर कोई भाग-दौड़ में व्यस्त है। बढ़ती जिम्मेदारियाँ, प्रतिस्पर्धा और अनिश्चित भविष्य ने मनुष्य के जीवन को तनावग्रस्त बना दिया है। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखना एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। यही वह स्थान है जहाँ योग और ध्यान जीवन में नई ऊर्जा और शांति का संचार करते हैं।

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करने की प्राचीन भारतीय विद्या है। प्राणायाम, आसन और ध्यान के माध्यम से यह शरीर में ऊर्जा का संचार करता है और मानसिक अशांति को दूर करता है। जब मन शांत होता है, तब व्यक्ति बेहतर निर्णय ले पाता है और जीवन को सकारात्मक दृष्टि से देखता है।

तनाव के समय हमारा मस्तिष्क 'फाइट या फ्लाइट' की अवस्था में चला जाता है, जिससे मानसिक दबाव और बढ़ता है। लेकिन योग और ध्यान न केवल सांसों को नियंत्रित करते हैं, बल्कि यह मस्तिष्क में प्रसन्नता देने वाले रसायनों (हैप्पी हार्मोन्स) का स्राव भी बढ़ाते हैं। यही कारण है कि नियमित योग करने वाले लोग मानसिक रूप से अधिक संतुलित, आत्मविश्वासी और रचनात्मक होते हैं।

ध्यान (मेडिटेशन) मानसिक स्वास्थ्य का आधार स्तंभ है। प्रतिदिन कुछ मिनट ध्यान करने से न केवल मन की अशांति दूर होती है, बल्कि एकाग्रता और स्मरणशक्ति भी बढ़ती है। आधुनिक शोध भी यह साबित कर चुके हैं कि योग और ध्यान से अवसाद, अनिद्रा, और चिंता जैसी मानसिक समस्याओं में लाभ मिलता है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि तनाव भरी जीवनशैली में योग और ध्यान वह कुंजी है, जो मनुष्य को मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक संतुलन प्रदान करती है। यदि हम इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लें, तो जीवन निश्चित ही अधिक स्वस्थ, सुखी और संतुलित बन सकता है।



निरीक्षक/जीडी सरजीत कुमार यादव  
कोबरा सेक्टर





## अगली पीढ़ी के प्राणों में भी बसानी होगी हिंदी



सरिता शर्मा,  
सहायक कमांडेंट/राजभाषा

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर है। यह वह माटी है जिसमें हमारी भावनाएँ, हमारी सोच और हमारी पहचान जड़ें जमाती हैं। हिंदी हमारे इतिहास की वो कड़ी है जो हमें हमारे पूर्वजों से जोड़ती है, हमारे साहित्य की वो कविता है जो हमारे मन के कोनों को छू जाती है, और हमारी भाषा है जिसमें हमारी आत्मा बोलती है।

आज की इस वैश्विक दुनिया में जहाँ हर ओर तेज़ी से विदेशी भाषाएँ, विशेषकर अंग्रेज़ी का दबदबा है, वहाँ हिंदी की महत्ता और भी बढ़ जाती है। हम यदि अपनी मातृभाषा को पीछे छोड़ देंगे, तो अपनी जड़ों से कट जाएंगे, अपनी आत्मा से दूर हो जाएंगे। अंग्रेज़ी भाषा ने विकास का द्वार खोला है, पर हिंदी हमारी संवेदनाओं, हमारी संस्कृति और हमारे लोक जीवन की असली परछाई है।

अगली पीढ़ी के दिलों और दिमाग में हिंदी का संचार होना बहुत जरूरी है, क्योंकि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान की नींव है। जब बच्चे हिंदी से प्रेम करेंगे, हिंदी में सोचेंगे और सपने देखेंगे, तभी यह भाषा जीवित रहेगी। हमें उन्हें हिंदी पढ़ने, बोलने और लिखने के साथ-साथ हिंदी साहित्य, कहानियाँ और कविताएँ सुनाने का अवसर देना चाहिए, ताकि वे अपनी जड़ों से जुड़े रहें। यही कारण है कि हिंदी को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है, जिससे हमारी सांस्कृतिक विरासत मजबूत बनी रहे और आने वाली पीढ़ियाँ भी इसे गर्व से आगे बढ़ाएं। हिंदी साहित्य का खजाना अनमोल है—चाँदनी सी कविताएँ, गहराई से भरी कहानियाँ, जीवन के रंगों से सराबोर नाटका ये सब हमारे संस्कारों का परिचायक हैं। इन धरोहरों को हम भुला नहीं सकते, क्योंकि वे हमारी आत्मा की आवाज़ हैं।

हमें चाहिए कि हिंदी को सिर्फ एक विषय न समझें, बल्कि उसे जीवन की भाषा बनाएं। घरों में हिंदी की बात हो, विद्यालयों में हिंदी का सम्मान हो, और समाज में हिंदी का उत्सव हो। तभी हमारी अगली पीढ़ी हिंदी को न केवल बोलेगी, बल्कि अपने अस्तित्व का हिस्सा भी बनाएगी।

अगली पीढ़ी के प्राणों में हिंदी का वास हो, तभी हमारी संस्कृति का उजियारा कायम रहेगा। हिंदी को संजोना, उसका सम्मान करना और उसे आगे बढ़ाना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है।

**क्योंकि हिंदी ही वह प्राण है, जिसमें हमारी आत्मा बसी है, हमारी संस्कृति जीवित है, और हमारा भारत महान है।**



“ हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों व भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए। ”



## यादों का झरोखा



श्वेता कुमारी  
पत्नी श्री गौरव कुमार, द्वि. कमा. अधि.  
203 कोबरा, केरिपुबल  
बरही, हजारीबाग (झारखण्ड)

वर्ष 2009 में जब कोबरा का गठन हो रहा था तब ईश्वर की कृपा से मेरा भी गठबंधन श्री गौरव कुमार, तत्कालीन सहायक कमाण्डेंट के साथ तय हो गया। नवम्बर 2009 में विवाह के उपरान्त जब मैं पहली बार 201 कोबरा में गई तो मन में कई तरह की बातें चल रही थी। क्योंकि मेरे पति ने विवाह के पूर्व कोबरा एवं केरिपुबल के बारे में बहुत सारी बातें बताई थी लेकिन उस समय कुछ समझ नहीं आया था क्योंकि हमारे परिवार में कभी ऐसा देखा नहीं था और न ही इस तरह की नौकरी में कोई था।

201 कोबरा में सी.ओ. मेडम और अन्य उच्च अधिकारियों की पत्नी एवं मेरे पति के बैचमैट तथा उनकी पत्नियाँ बहुत ध्यान देती थी जब पति ऑपरेशन में चले जाते थे। मैं, उस समय कोबरा में क्वार्टर नहीं बनने के कारण अपने पति के साथ जगदलपुर में एक किराए के घर में रहती थी। उस पर भी कई बार मेरे पति से बात भी नहीं होती थी। मैं, सोचती थी कहीं मैं फंस गई और सोचती थी कि मेरे पति कहां चले जाते हैं कि एक बार फोन भी नहीं करते। मैं, कैसे रहती थी और समझ नहीं आता था कि मैं, अपनी कुछ बातें कैसे अपने पति से शेयर कर सकूँ। मैं, हमेशा से सयुक्त परिवार में रहती थी। अचानक मुझे नए ढंग से गृहस्थी बसाना पड़ा। जब मैं, जगदलपुर रहने लगी थी तब एक दिन रात में एक चोर आया। मैं, बहुत डर गई। लेकिन उस समय मेरे पति साथ थे। इसी तहत से खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ अगले 03 साल देखते ही देखते निकल गये। वहाँ से निकलते वक्त भी जब मेरे पति का पदोन्नति पर स्थानान्तरण हुआ तब डिब्रूगढ़ (असम) जाने के लिए सारा सामान पैक कर चुके थे तभी मेरे पति अचानक राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड, नई दिल्ली में प्रशिक्षण हेतु चले गये। मुझे एक नई चुनौती का पुनः सामना करना पड़ा और सारा सामान रेलवे से पार्सल से डिब्रूगढ़ (असम) भेजना पड़ा। यह सब मैंने 201 कोबरा परिवार के सहयोग से ही कर पाई। इसके उपरान्त मुझे डिब्रूगढ़ (असम), सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल), बेलगाँव (कर्नाटक) में पति के साथ रहने का मौका मिला।

मैं, अभी 203 कोबरा में हूँ और मेरे पति द्वि.कमा.अधिकारी हैं और कई युवा अधिकारी नई-नई शादी करके आ रहे हैं और उनकी नई नवेली दुल्हन को देखकर जो मैं महसूस करती थी, आज वो मेरी दोस्त वैसे ही महसूस करती है और कहती है - “मैम मन नहीं लग रहा है। सब ठीक है न, वहाँ पर!” वे सब सारी बातें वही दोहराती हैं जो पहले मैं महसूस किया करती थी। वो मैं नई-नई फैमिली में देख रही हूँ और मैं अब बहुत अच्छे से समझती भी हूँ और उनको समझाती हूँ कि “आप अच्छे से रहें हम लोग आपके पास हैं ना” क्योंकि अभी भी मेरे पति ऑप्स जाते हैं। मैं, उन लोगों के साथ अच्छे से रहती भी हूँ क्योंकि कोबरा परिवार एक दूसरे का भी बहुत ध्यान देता है। सब को पता होना चाहिए कि कहीं भी जाए वहाँ एक परिवार बनाए क्योंकि हमें उस परिवार से बहुत मदद मिलती है। हम लोग उन्हें बहुत अच्छे तरीके से इस परिवार में अपना एक बहुमूल्य जीवन प्रदान करते हैं।

## भारत के वीर

मैं हूँ भारत का वीर, आग हवाएँ कांटे चाहे हो नीर ।  
सर्दी गर्मी चाहे वर्षा चले घोर, रखता सदा रायफल सिर मोर ॥

चाहे हो जाए सुबह से ये शाम, करता नहीं हूँ कभी मैं आराम ।  
घुसने ना दूँ दुश्मन अपनी ओर, हो जाए रात, चाहे फिर भोर ॥

संख्या में हो चाहे बहुत ही ज्यादा, इससे ज्यादा मुझे कुछ ना आता ।  
सिर ना झुके मेरा दुश्मन के आगे, करदूँ एक-एक सर कलम उनके ॥

जो छूने की कोशिश करे हमको, उखाड़ ही दूंगा जड़ से ही उसको ।  
पहुंचा दूंगा उन सब को यमलोक, फिर नाम न लेंगे घुसने का परलोक ॥

आन बान और मेरा शान तिरंगा, हम भारतीयों की है पहचान तिरंगा ।  
दिल में बसा हम सभी के तिरंगा, तीन रंग का यह प्यारा सा तिरंगा ॥

तिरंगे का ये चक्र-धर्म का प्रतीक, साहस बलिदान केसरिया रंग प्रतीक ।  
सफेद सच्चाई शांति पवित्रता प्रतीक एवं हरा रंग है संपन्नता का ये प्रतीक ॥

हव0/जीडी अरमकान्त सिंह  
ई/207 कोबरा





## आत्मा की पुकार

सोच बदलने से विश्व बदलेंगे  
नवभारत निर्माण के लिए विश्व का कल्याण के लिए  
सारे प्राणी एक स्वरूप है  
अखंड शक्ति से आगे बढ़ना है  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे

खुद से शुरू करेंगे विश्व कल्याण की धारा  
मानव जीवन के लिए ननों सितारा  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे ।

माता-पिता की सेवा करना है  
सेवा-निष्ठा से हर समय जीना है  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे ।

लक्ष्य तेरी निश्चित है  
आत्म विश्वास तेरे पास है  
फिर डर किस बात का है  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे ।

सूरज की किरणों की रोशनी होगी  
प्राणी जैसा शुद्ध विचार करेंगे  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे ।

सारा विश्व प्रेम स्वरूप है  
जैसे सोच है वैसे नजर आता है  
उसी सोच को सकारात्मक बदलेंगे  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे ।

गिरगिट जैसा जीना नहीं है  
रावण जैसा मरना नहीं है  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे  
मानव का जीवन वास्तविक नहीं है  
इस दिखावे के जीवन में जीना नहीं है  
सच्चाई से जीने का विचार हमें लाना है  
क्योंकि सोच बदलने से विश्व बदलेंगे  
नवभारत निर्माण के लिए विश्व के कल्याण के लिए ।

“जय हिन्द जय भारत”

सिपाही/जीडी हस्केला गोपी  
मुख्यालय 208 कोबरा

## घर से जाते सिपाही की व्यथा



माँ की आँखों में सपनों का सागर,  
पिता के चेहरे पर गर्व का उजागर।  
छोटे भाई ने थामा दामन कसकर,  
बहन ने चुपके से आँसू पोंछे भीतर।

वो चल पड़ा कंधों पर जिम्मेदारी का बोझ उठाए,  
सीने में वतन की धड़कन, आँखों में हौसले की लौ जगाए।  
हवा ने भी सरपट कदमों से कहा,  
“जा बेटा, देश तुझ पर नाज़ करेगा।”

सीमा पर बर्फ हो या रण में आग,  
सिपाही नहीं रुकता, चाहे कितनी हो बाधा या त्याग।  
घर की यादें दिल में संजोए रखता है,  
पर मातृभूमि को ही अपना सच्चा घर समझता है।

- उप निरी० अजय कुमार, कोबरा सेक्टर

### "एक सैनिक की व्यथा"

कई बार हम सोचते हैं कि देशभक्ति क्या होती है? झंडा फहराना, गीत गाना या सोशल मीडिया पर देश के लिए पोस्ट करना?  
पर असली देशभक्ति तो उस सैनिक के दिल में होती है, जो हर सांस देश के नाम करता है... और हर धड़कन में बस "जय हिंद" गूँजती है।  
वह सैनिक, जो हँसते-हँसते अपने परिवार से दूर सरहद की सर्द हवाओं में खड़ा रहता है,  
जिसे पता होता है कि अगली सुबह देखनी है या नहीं, इसका कोई भरोसा नहीं,  
फिर भी वह बिना डरे, सीना तानकर दुश्मन के सामने खड़ा हो जाता है।  
कभी उसकी आँखों में अपनी बेटी की शादी की तसवीर तैरती है,  
तो कभी माँ की कांपती आवाज़ कानों में गूँजती है –  
"बेटा, जल्दी लौट आना..."  
पर वह लौटता नहीं... क्योंकि देश ने उसे आवाज़ दी होती है।  
और जब तिरंगे में लिपटा हुआ बेटा वापस आता है,  
तो माँ की आँखों से आंसुओं की धारा बहती है —  
गर्व भी होता है... और एक न भरने वाला खालीपन भी।  
सैनिक की व्यथा कोई समाचार की हेडलाइन नहीं बनती,  
उसकी पीड़ा, उसकी तन्हाई, उसकी चुप्पी सिर्फ वही जानता है।  
जब हम त्यौहारों में व्यस्त होते हैं, वह सीमा पर गोली की आवाज़ सुन रहा होता है।  
जब हम अपनों के साथ हँसते हैं, वह दूर कहीं अकेले, सिर्फ यादों से बातें करता है।  
वह एक इंसान नहीं, एक भावना है।  
वह दर्द में भी मुस्कुराने वाला, देश के लिए मर मिटने वाला वो वीर है,

-निरीक्षक(मंत्रा) रामेश्वर सिंह, कोबरा सेक्टर



## ऑपरेशन के.जी.एच./ब्लैक फॉरेस्ट : नक्सल मुक्त भारत के लिए कोबरा का मौन युद्ध

भारत के घने जंगलों के शांत वातावरण में, शहर की चकाचौंध और सुर्खियों से दूर, ऐसे लोग हैं जो हर दिन खतरों से गुजरते हैं, पहचान के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि उन्हें विश्वास है कि उनका आज का साहस कल शांति लाएगा। इनमें सी.आर.पी.एफ. के एक विशेष बल, कोबरा (कमांडो बटालियन फॉर रेजोल्यूट एक्शन) के कमांडो भी शामिल हैं। डी.आर.जी. और एस.टी.एफ. के साथ उनका नवीनतम मिशन, ऑपरेशन कॉर्गुट्टा हिल्स (के.जी.एच.), केवल एक सामरिक अभियान से कहीं अधिक है, यह साहस, बलिदान और मार्च 2026 तक नक्सल हिंसा को समाप्त करने के लिए राष्ट्र की दृढ़संकल्प की यात्रा की कहानी है, जैसा कि हमारे गृह मंत्री ने घोषणा की है।

तेलंगाना-छत्तीसगढ़ सीमा पर स्थित कॉर्गुट्टा पहाड़ियाँ सिर्फ एक भौगोलिक विशेषताएँ ही नहीं हैं, ये दशकों से चले आ रहे सशस्त्र विद्रोह की मूक गवाह भी हैं। ये जंगल लंबे समय से भारी हथियारों से लैस माओवादी समूहों की शरणस्थली रहे हैं। यहाँ संकरी पगडंडियाँ अत्याधुनिक विस्फोटक उपकरणों को छुपाती हैं, घनी वनस्पतियाँ बंदूकधारियों को ढाल देती हैं और हर सरसराहट खतरा पैदा कर सकती है। खुफिया एजेंसियों ने पुष्टि की है कि कुछ सबसे कुख्यात नक्सली नेता अपने सैकड़ों हथियारबंद कार्यकर्ताओं के साथ इस इलाके को अपने गढ़ के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे, वे न केवल वहाँ रह रहे थे, बल्कि ऐसे हमलों की तैयारी भी कर रहे थे, जिनसे निर्दोष लोगों की जान जा सकती थी। उनके मंसुबों को नाकाम करने के लिए, ऑपरेशन के.जी.एच. शुरू किया गया, जिसमें कोबरा, राज्य पुलिस इकाइयाँ और अन्य विशेष बल शामिल थे।

20 अप्रैल, 2025 की सुबह, 202 कोबरा की टीमें रवाना हुईं। उनका काम कहने में तो आसान था, लेकिन असल में अत्यन्त जोखिम भरा था। इस टुकड़ी को आदेश दिया गया विस्फोटकों से भरे उल्तापल्ली गांव में प्रवेश करें, सभी भागने के रास्ते काट दें और जंगलों में तब तक अंदर की ओर बढ़ें जब तक नक्सलियों के पास छुपने के लिए कोई जगह न बचे। अत्यन्त जोखिम भरा हर कदम सावधानी से उठाया गया। नीचे जमीन फट सकती थी, आगे के पेड़ों में निशानेबाज छिपे हो सकते थे। घंटों तक, वे खड़ी ढलानों, कंटीली झाड़ियों और इतने घने सन्नाटे से गुजरते रहे कि उनकी अपनी धड़कनें भी तेज लग रही थी। फिर भी, वे सतर्क, एकाग्र और अविचलित होकर आगे बढ़ते रहे। अगले कुछ दिनों में, उनके ठिकानों पर बार-बार हमले हुए। चाँदनी रात और गरज के साथ बारिश के बीच, जिससे आवाजें और दृश्य धुंधले हो गए थे, हथियारबंद नक्सलियों के समूह कोबरा की घेराबंदी तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। गोलियों ने रात का सीना चीर दिया, ग्रेनेडों ने

कर दिया, लेकिन कमांडो पीछे नहीं हटते। उन्होंने केवल जरूरत पड़ने पर ही जवाबी फायरिंग की, नियंत्रित, सटीक और अनुशासित, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनसे ग्रामीणों या निर्दोषों को कोई नुकसान न पहुँचे।

**छोटी जीत, बड़ा प्रभाव :** मई की शुरुआत में जब अभियान समाप्त हुआ, तब तक कोबरा टीमों ने हथियारों, विस्फोटकों और जरूरी सामानों का बड़ा जखीरा बरामद कर लिया था, जिनका इस्तेमाल विद्रोही शिविरों को महीनों तक चलाने के लिए किया जा सकता था।

इन जखितियों से नक्सलियों को सिर्फ भौतिक नुकसान ही नहीं हुआ, बल्कि इससे नागरिकों, स्कूलों, सड़क परियोजनाओं और स्थानीय पुलिस चौकियों पर हमला करने की उनकी क्षमता भी कम हो गई।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सुरक्षा बलों ने उन इलाकों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया जो वर्षों से सरकार की पहुँच से बाहर थे। इस दूरदराज इलाकों में रहने वाले ग्रामीणों के लिए, इसका मतलब एक अनमोल चीज थी: **सुरक्षा की शुरुआत।**



**एक मिशन से कहीं अधिक-एक वादा :** ऑपरेशन के.जी.एच. के महत्व को समझने के लिए आंकड़ों और मानचित्रों से आगे देखना होगा। ये कमांडो हफ्तों, कभी-कभी महीनों तक अपने परिवारों से दूर, अस्थायी शिविरों में रहते हैं जहाँ हर खाना उनके लिए आखिरी खाना हो सकता है। वे भारी हथियार तो रखते ही हैं, साथ ही घर से चिट्ठियाँ भी साथ ले जाते हैं। वे मनोबल के लिए मुस्कराते हैं, तब भी जब रातों की नींद हराम करने और अंतहीन गश्त से उनके शरीर में दर्द होता है। उनके लिए, यह केवल उग्रवादियों को निष्क्रिय करने के बारे में नहीं है, यह उनके बच्चों, उनके माता-पिता और प्रत्येक नागरिक से किए गए वादे को निभाने के बारे में है कि “भारत में किसी भी बच्चे को रात में गोलियों की आवाज सुनते हुए बड़ा नहीं होना चाहिए।”

अँधेरे को और भी रोशन

जब गृह मंत्री ने “मार्च 2026 तक नक्सल-मुक्त भारत” का विजन घोषित किया, तो यह कोई खोखला नारा नहीं था। यह एक ऐसा लक्ष्य बन गया जिसे इन लोगों ने कदम दर कदम, पहाड़ दर पहाड़ और ऑपरेशन दर ऑपरेशन पूरा करने का बीड़ा उठाया है।

- कमाण्डेन्ट-202 कोबरा



सीआरपीएफ के 86वें स्थापना दिवस की परेड में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिकता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि सीआरपीएफ के जवानों ने हमेशा देश की एकता ओर अखंडता बनाए रखने के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया है। देश में जब भी कहीं अशांति होती है और वहां सीआरपीएफ जवान उपस्थित होते हैं तो मुझे यह भरोसा होता है कि सीआरपीएफ मौजूद है तो विजय सुनिश्चित है। सी आर पी एफ की कोबरा बटालियन को आता देख दुर्दांत नक्सलियों की रूह कांप जाती है।



## कोरा गट्टा हिल्स के रण बांकुरे

चिलचिलाती धूप में कमान्डो की तैयारी,  
कोरा गट्टा हिल पर विजय हमारी ।

घने जंगल, ऊँची पहाड़ियाँ,  
हर तरफ था सन्नाटा भारी ।  
नक्सल आतंक के साथ में,  
काँप रही थी धरती हमारी ।  
पग पग पर थी माइंस,  
चलना बड़ा कठिन था ।

पर वीर सपूत जब निकले,  
ललकार लिए थे प्राणों में ।  
कोरा गट्टा हिल छोड़ो,  
"अब न तुम बच पाओगे किसी कोनों में ।"

घाटी में हुआ सामना,  
गूँजी गोलियों की गड़गड़ाहट ।  
धरती हिली, दुश्मन डोले,  
कमान्डो की बढ़ती गयी आहट ।

भारत माँ के लाल लड़े हैं,  
जान हथेली पर रखकर ।

नक्सलवाद के अंधकार को,  
महायोद्धाओ ने चीर दिया ।  
कोरा गट्टा हिल के रण में,  
भारत के हर कोने में फिर ये तिरंगा लहरा दिया ।

जय हिंद,  
CRPF सदा अजेय, भारत माता की जय ।

सिपाही/जीडी  
अक्षय कुमार तोमर (BDDS)  
एफ/205 कोबरा



## कोबरा : सामुदायिक एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम

वर्ष 2025 के दौरान 206 कोबरा बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF) द्वारा अपने कैंप परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में विविध प्रकार के सामुदायिक, सांस्कृतिक एवं जन-जागरूकता कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया। इन आयोजनों का प्रमुख उद्देश्य स्थानीय जनता के साथ विश्वास एवं सहयोग का वातावरण निर्मित करना रहा है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से न केवल जन-सामान्य में सुरक्षा बलों के प्रति विश्वास एवं सम्मान में वृद्धि हुई है, बल्कि समाज और बल के बीच की दूरी भी काफी हद तक कम हुई है। विशेषकर आदिवासी और दूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों को बल की सकारात्मक भूमिका से परिचित कराने में ये पहल अत्यंत प्रभावी रही। इन समस्त गतिविधियों ने 206 कोबरा बटालियन की एक संवेदनशील, जागरूक और जनकल्याणकारी छवि प्रस्तुत की है। "जनता के साथ-जनता के लिए" की भावना को आत्मसात करते हुए बटालियन ने यह सिद्ध किया कि सुरक्षा के साथ-साथ समाज के प्रति उत्तरदायित्व को निभाना भी उनकी प्राथमिकता है।



क्षेत्रीय केरिपुबल परिवार कल्याण संगठन -कावा(206) द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 18 जुलाई 2025 को क्षेत्रीय केरिपुबल परिवार कल्याण संगठन (क्षेत्रीय कावा-206) के तत्वाधान में भंडारा सिटी हॉस्पिटल एवं यूनिट अस्पताल-206 कोबरा के सौजन्य से एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का विषय था 'हेपेटाइटिस एवं जलजनित रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण'।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. शुभम दिलीप कटकवार (भंडारा सिटी हॉस्पिटल) रहे, जिन्होंने व्याख्यान एवं मुक्त चिकित्सा जांच शिविर का सफल संचालन किया। इस शिविर के दौरान 'हेपेटाइटिस एवं जलजनित रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण' के साथ-साथ महिला स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।

शिविर में लगभग 150 महिलाएं एवं बच्चे उपस्थित थे, जिन्होंने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई और संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। इस आयोजन का उद्देश्य समुदाय में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करना था।

इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से 206 कोबरा बटालियन न केवल सुरक्षा बल के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है, बल्कि सामाजिक एवं स्वास्थ्य जागरूकता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।



- कमाण्डेन्ट-206 कोबरा

### 150 महिलाएं, बच्चों की स्वास्थ्य जांच

भंडारा, ब्यूरो. देश की आंतरिक सुरक्षा व नक्सलियों से निपटने के लिए विशेष रूप से गठित की गई 206 कोबरा सीआरपीएफ, ग्राम-चीतापुर के कैंप परिसर में क्षेत्रीय कावा-206 की अध्यक्ष रजनी यादव, कमाण्डेंट पुष्पेन्द्र कुमार के मार्गदर्शन एवं क्षेत्रीय केरिपुबल परिवार कल्याण संगठन के तत्वाधान में भंडारा सिटी हॉस्पिटल एवं यूनिट अस्पताल-206 कोबरा के सौजन्य से हेपेटाइटिस एवं जलजनित रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण नामक विषय पर व्याख्यान एवं मुक्त चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि भंडारा सिटी हॉस्पिटल से डॉ. शुभम कटकवार के साथ यूनिट अस्पताल-206 कोबरा से वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ० हेमंत राज एवं वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रजीता प्रभाकरन भी मौजूद थे। इस मुक्त चिकित्सा जांच शिविर एवं व्याख्यान सेशन के दौरान है. लगभग 150 महिलाएं एवं बच्चों का हेल्थ चेकअप करवाया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि डॉ. शुभम कटकवार को क्षेत्रीय कावा-206 की उपाध्यक्षा नवजोत कौर के हाथों स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। शीतू शर्मा, खुशबू कुमारी, अधिकारी आदि उपस्थित थे।

206 कोबरा बटालियन द्वारा आयोजित मेडिकल प्रयासों ने स्थानीय जनता में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और विश्वास को बढ़ावा दिया है। विभिन्न स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से लोगों को मुफ्त चिकित्सा जांच एवं उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिससे ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों के निवासियों को लाभ हुआ। खासकर महिलाओं और बच्चों को विशेष ध्यान दिया गया, ताकि उनकी सेहत में सुधार हो और वे स्वस्थ जीवन जी सकें। इस प्रकार के सामाजिक एवं चिकित्सकीय प्रयासों से न केवल जनता के स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है, बल्कि सुरक्षा बल और स्थानीय समुदाय के बीच एक मजबूत विश्वास एवं सहयोग का वातावरण भी निर्मित हुआ है।

भविष्य में भी कोबरा द्वारा इसी प्रकार सामाजिक व स्वास्थ्यपरक जागरूकता अभियान जारी रखते हुए जनता का विश्वास जीतने का सार्थक प्रयास किए जाएंगे।





## रक्षाबंधन : मेरी राखी, मेरे देश के सैनिकों के नाम



दिनांक 08 अगस्त 2025 को पूरे हर्षोल्लास के साथ रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। इस शुभ अवसर पर नजदीकी विद्यालयों के अध्यापकगण, छात्र-छात्राएं तथा भंडारा जिले की विभिन्न क्षेत्रों से महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई। कार्यक्रम में महिलाओं ने जवानों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर उनके सुख, समृद्धि और दीर्घायु की कामना की।

इस अवसर पर बच्चों और अध्यापकों ने जवानों के साथ आत्मीय संवाद स्थापित किया, जिससे एक सौहार्दपूर्ण माहौल बना। साथ ही, महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और सहयोग के प्रति संकल्प लिया गया।

यह कार्यक्रम न केवल रक्षाबंधन के पारंपरिक उत्सव को जीवंत बनाता है, बल्कि समाज में एकता, भाईचारे और सुरक्षा की भावना को भी मजबूती प्रदान करता है। इस आयोजन के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि रक्षाबंधन केवल कलाई पर राखी बांधने का पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक सद्भाव, सुरक्षा और सम्मान का पर्व है।



# नवभारत

www.navbharatlive.com

---

## गांगलवाड़ा की छात्राओं ने सैनिकों को बांधी राखी

### ‘मेरी राखी मेरे देश के सैनिकों के नाम’ अभियान

■ भंडारा, ब्यूरो. 9 अगस्त, शनिवार को रक्षाबंधन— मेरी राखी, मेरे देश के सैनिकों के नाम इस विशेष अभियान का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में जिला परिषद प्राथमिक शाला गांगलवाड़ा के 18 विद्यार्थी, आंगनवाड़ी सेविका गीता पेंदाम, वैशाली चाचरे तथा प्रशिक्षणार्थी शशिकांत देशपांडे सहित सभी विद्यार्थी उपस्थित थे. कोबरा बटालियन 206, चित्तपुर के प्रमुख अतिथि लेफ्टिनेंट कमांडेंट पुष्पेंद्र कुमार तथा सभी सैनिक अधिकारी वर्ग के साथ कोबरा बटालियन, चित्तपुर में रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में श्रीफल, तौलिया जैसी भेंटवस्तुएं देकर छात्राओं ने सैनिकों को राखी बांधी. इसके पश्चात बच्चों ने नए अनुभव से अत्यंत प्रसन्नता अनुभव की.

इस अवसर पर शाला की शालेय व्यवस्थापन समिति की अध्यक्ष सपना पेंदाम, उपाध्यक्षा शेवंता कोराम तथा गांगलवाड़ा शालेय समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे. कार्यक्रम के अंत में मुख्याध्यापक डी.एम. अंबादे को सम्मानचिह्न देकर सम्मानित किया गया.

**"यह राखी सिर्फ एक धागा नहीं,**

**बल्कि सम्मान, सुरक्षा और देशभक्ति का प्रतीक है।**

**जब बहन इसे फौजी भाई की कलाई पर बांधती है,**

**तो वह सिर्फ रिश्ते की मिठास नहीं,**

**बल्कि देश की सुरक्षा का संकल्प भी बांधती है।"**

## ‘हर-घर तिरंगा’ अभियान के तहत बाईक तिरंगा रैली का आयोजन

तिरंगे की शान है हम सबकी शान, इससे बढ़कर नहीं कोई अरमान।  
आओ मिलकर करें प्रण ये प्यारा, हर घर तिरंगा हो हमारा।

दिनांक 12 अगस्त 2025 को ‘हर-घर तिरंगा’ अभियान के अंतर्गत अधिकारियों एवं जवानों की सहभागिता से भंडारा जिले में एक भव्य बाईक तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। यह रैली 206 कोबरा कैम्पस से प्रारंभ होकर गांव चीतापुर, आमगांव, धारगांव, डब्बागांव होते हुए जिला मुख्यालय भंडारा तक आयोजित की गई।

यह रैली स्थानीय ग्रामवासियों एवं स्कूली बच्चों को देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत करने तथा तिरंगे के सम्मान, महत्व और गरिमा के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। रैली में ग्रामवासियों और स्कूली बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और उत्साहपूर्वक अपनी देशभक्ति का परिचय दिया। इस आयोजन से ‘हर-घर तिरंगा’ अभियान को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण सफलता मिली।

-कमाण्डेन्ट 206 कोबरा



“गांव-गांव गूंजा देशप्रेम का संदेश,  
जब तिरंगे के साथ चला जन-जन का काफिला।”



## "तिरंगा हमारी शान है"

(महापुरुष रामधारी सिंह 'दिनकर' की शैली में)

तिरंगा हमारी जान है,  
तिरंगा ही पहचान है।

ये रंग नहीं बस तीन,  
ये हैं भारत की तस्वीरें पुरानी।  
केसरिया त्याग बताता है,  
श्वेत शांति का नाता है,  
हरा हरियाली लाता है,  
चक्र हमें गति सिखाता है।

जब-जब लहराया तिरंगा,  
गूँजा वंदे मातरम् का नारा।  
खेतों में हल चला किसान,  
सीमा पर डटा जवान।

तिरंगे की ये आन बनी रहे,  
हर घर में इसकी शान बनी रहे।

हम सब मिलकर ये संकल्प लें,  
भारत माँ का मान कभी ना कम होने दें।



## पुकारती वसुंधरा

भारत माँ को फिर वही, अमर विश्वास चाहिए,  
सभी कार्य हो सफल, ऐसा साहस चाहिए,

निस्वार्थ भाव से सदा, जिए जो जननी के लिए  
कुर्बान कर दे जिन्दगी, मातृभूमि के लिए  
जो बढ़े आगे निज कर्म से, नेतृत्व खास चाहिए  
सभी कार्य हो सफल, ऐसा साहस चाहिए,

आतंक की राह पर चलकर, देश को जो खा रहे,  
पथ से है जो भटका हुआ, कुकृत्य से भटका रहे  
जो राह दिखलाए उसे उज्ज्वल प्रकाश चाहिए  
सभी कार्य हो सफल, ऐसा साहस चाहिए,

है खून से लथपथ धरा, पर खून वो किस काम का  
अपराध करता रोज वो, फिर घूमता बदनाम सा  
महका दे फिर से चमन, ऐसा गुलाब चाहिए  
सभी कार्य हो सफल, ऐसा साहस चाहिए,

पुकारती वसुंधरा, शौर्य शोणित में भरी  
है पाप से बोझिल हुई, संहार दुष्टों का करो  
समता वतन के वास्ते, हर एक श्वास चाहिए  
सभी कार्य हो सफल, ऐसा साहस चाहिए



उप निरीक्षक/जीडी बिरेन्द्र सिंह, कोबरा सेक्टर

## सी.आर.पी.एफ. कोबरा

हम कोबरा कमांडो की बढ़िया ट्रेनिंग पाए हैं

हम अमन शान्ति का संदेशा लाए हैं।

आतंकवादी, नक्सलवादी चाहे कितने भी आ जाए

कोबरा कमांडो के सामने कभी नहीं वो टिक पाए

कठिन परिश्रम करने की हम शिक्षा पाए हैं

हम कोबरा कमांडो की बढ़िया ट्रेनिंग पाए हैं

हम अमन शान्ति का संदेशा लाए हैं।

दुश्मन कितना भी शातिर हो, हम से बच नहीं पाएगा

धूल चटा देंगे दुश्मन को कर कुछ नहीं वो पाएगा

हम करते हैं ऐसी जगह पर ड्यूटी जहाँ खतरों के साए हैं

हम कोबरा कमांडो की बढ़िया ट्रेनिंग पाए हैं

हम अमन शान्ति का संदेशा लाए हैं।

जंगल योद्धा के नाम से हमारी पहचान हैं

करे मुकाबला हम डट कर के, हम रहते अस्त्र तान हैं

देश सुरक्षा की खातिर ही हम सब कसमें खाए हैं

हम कोबरा कमांडो की बढ़िया ट्रेनिंग पाए हैं

हम अमन शान्ति का संदेशा लाए हैं।

हंसी खुशी से जीना हमने, देश में नाम कमाना हैं

सोने की चिड़िया भारत को, फिर से हमें बनाना हैं।

देश सेवा में हम सबने अपने आगे कदम बढ़ाए हैं

हम कोबरा कमांडो की बढ़िया ट्रेनिंग पाए हैं

हम अमन शान्ति का संदेशा लाए हैं।



## मोबाइल महाराज की महिमा

सुबह-सुबह उठते ही सबसे पहले,  
मोबाइल महाशय का होता खेला।

अलार्म से जगाएँ, गाना भी सुनाएँ,  
नेट धीमा हो तो मन को रुलाएँ।

व्हाट्सऐप, इंस्टा, फ़ेसबुक की टोली,  
दिनभर करती बातें ढेरों सारी।

घरवाले बोले—“ज़रा काम भी कर लो”,  
लेकिन साहब बोले—“पहले एक रील तो बनवा लो!”

नेट बंद हो जाए तो दिल घबराए,  
मानो साँसें ही अटक जाएँ।

बैटरी कम हो तो चेहरे पर छाए उदासी,  
चार्जर लगे तो लौटे फिर से हँसी।

मोबाइल बिना अब जीवन अधूरा,  
सबका साथी, सबसे प्यारा।

लेकिन कभी-कभी ये सोच सताए,  
कहीं इंसान मोबाइल न बन जाए!

वंशिका पुत्री सहा० उप निरी० वेद प्रकाश  
कोबरा सेक्टर



## “साहस सृजन”- कोबरा के पराक्रम की अमर गाथा

जहाँ हौसले की ऊँचाईयाँ आसमान छूती हैं,  
जहाँ वीरता हर कदम पर इतिहास लिखती है,  
वहीं से जन्म लेती है हमारी गौरवगाथा-  
‘साहस सृजन’

यह केवल एक पत्रिका नहीं,  
यह कोबरा के शूरवीरों का उद्घोष है,  
जो दुर्गम वनों में, अंधेरी रातों में,  
राष्ट्र की रक्षा के लिए सीना ताने खड़े रहते हैं।

यह उन कमांडोज की कलम है,  
जिनकी बंदूकों से शौर्य की ध्वनि गर्जती है,  
और जिनके शब्द भी उतने ही तेजस्वी हैं,  
जितनी वीरता परिलक्षित रणभूमि में।

हर पृष्ठ पर अंकित होगा-  
सेवा, त्याग, तपस्या और बलिदान का संदेश,  
हर पंक्ति में झलकेगा-  
अनुशासन, निष्ठा और मातृभूमि का प्रेम।

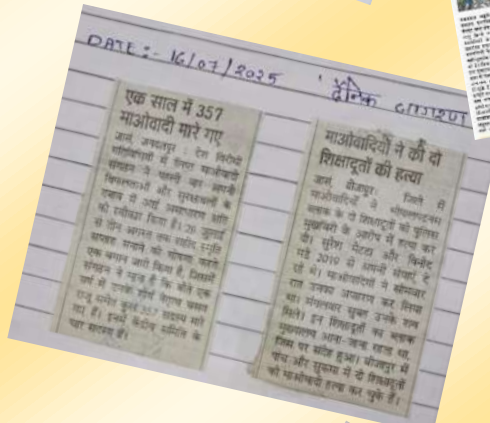
कोबरा जवानों !  
तुम्हारा साहस ही है बल की पहचान,  
वर्षा और तूफानों में भी अडिग तुम्हारा अभियान,  
तुम्हारा सृजन ही है हमारा अभिमान।

“साहस सृजन” तुम्हारी आवाज है,  
तुम्हारे जज्बे और साहस का त्योहार है,  
और राष्ट्र के कदमों में समर्पित-  
एक अद्वितीय अनमोल उपहार है।

राजेन्द्र कुमार, द्वि.क.अध.  
210 कोबरा



यह कमांडो बटालियन सिर्फ देश की सुरक्षा नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और देशभक्ति का सशक्त प्रतीक है। अखबारों में दर्ज उनकी बहादुरी की हर कहानी जीवंत है।





## चित्र दीर्घा



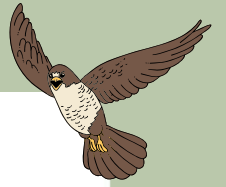






संग्राम की भीषण अग्नि में, अडिग खड़े प्रहरी बन जाए ।  
कोबरा के वीरों के साहस से दुश्मन के मन भय से भर जाएं ॥  
पराक्रम जिनका जीवन मंत्र, शहादत जिनकी अमर कथाएं।  
धरती गूंजे जयघोषों से, पराक्रमी सपूत अमर कहलाएं॥





संकल्प और साहस के अद्भुत प्रतीक,  
निर्भीकता और निष्ठा की मिसाल,

जो हर चुनौती को साहस के साथ स्वीकार करते  
हैं, देश की रक्षा में अपनी जान न्यौछावर करने  
वाले सच्चे योद्धा ।

कोबरा कमांडो को समर्पित यह पत्रिका

उनके अडिग संकल्प और अपार बलिदान की  
गाथा से सजी उनकी वीरता, समर्पण और विजय  
की अमर कहानी कहती है।

